ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 24 सितम्बर 2017

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

सप्ताह रविवार, 24 सितम्बर 2017 से 30 सितम्बर 2017

आश्विन शु.– 04 ● वि० सं०–2074 ● वर्ष 58, अंक 90, प्रत्येक मंगलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 193 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,117 ● पृ.सं. 1–12 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

बी.बी.के डी.ए.वी. अमृतसर, में हुआ वृक्षारोपण अभियान का आयोजन

बी.के डी.ए.वी. कॉलेज फॉर विमेन, लारेंस रोड, अमृतसर में एन.एस.एस. यूनिट द्वारा महर्षि दयानन्द सरस्वती के मानवता–उद्धार को समर्पित पर्यावरण सुरक्षा हेतु विभिन्न प्रकार के पौधे लगाकर वृक्षारोपण अभियान का आयोजन किया गया जिसमें मुख्यातिथि डॉ. राजेश कुमार, एन.एस.एस. कॉओर्डिनेटर, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर पधारे। इस अभियान के अन्तर्गत कपूर, दालचीनी, नीम, आमला, अदरक, रुद्राक्षस, हरहर, तेजपत्ता आदि के पौधे महाविद्यालय में

लगाए गए।

प्राचार्या डॉ. पुष्पिंदर वालिया ने एन.एस. एस. प्रोग्राम आफिसरों और एन.एस.एस. वॉलिन्टियर्स को इस प्रशंसनीय अभियान के आयोजन पर हार्दिक बधाई दी। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती के मूलभूत सिद्धांत मानवता उद्धार हेतु भारत को हरा–भरा बनाना हमारा मुख्य कर्त्तव्य है। आगे उन्होंने वॉलिन्टियर्स को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि स्वच्छ पर्यावरण ही मनुष्य–जीवन का मूलभूत आधार है इसलिए वे भारत को प्रदूषण–रहित बनाने में उत्साहपूर्वक भाग लें।

इस अभियान में प्रो. सुरभि सेठी, एन.एस.एस. प्रोग्राम ऑफिसर सहित टीम सदस्यों एवं एन.एस. वॉलिन्टियर्स ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

डी.ए.वी. शिक्षण महाविद्यालय, अम्बाला ने मनाया हिन्दी दिवस

सोहन लाल डी. ए. वी. शिक्षा महाविद्यालय, अम्बाला शहर में हिन्दी विभागाध्यक्ष एवं हिन्दी संस्था के संस्थापक डॉ. नरेन्द्र कौशिक के दिशा निर्देशन में हिन्दी दिवस मनाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. विवेक कोहली ने बड़े ही सुन्दर, सटीक एवं सधे हुए शब्दों में हिन्दी भाषा के महत्व पर प्रकाश डाला। डॉ. नरेन्द्र कौशिक ने छात्रों को हिन्दी के गौरवमयी इतिहास से परिचित करवाया तथा स्वरचित कविता के माध्यम से हिन्दी भाषा को अपनाने के लिए छात्रों को प्रेरित किया।

श्रीमती उमा सुधा कमिश्नर नगर निगम, कुरूक्षेत्र ने इस कार्यक्रम में मुख्यातिथि के रूप में शिकरत की। उन्होंने छात्राध्यापकों को सम्बोधित करते हुए हिन्दी साहित्य के प्रति प्रेम एवं हिन्दी में रचनाएं लिखने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में पधारी गीतिका जसूजा, विजय गुप्ता जी ने छात्रा अध्यापकों का मार्गदर्शन करते हुए कहा हिन्दी भाषा का प्रयोग बढ़चढ़कर व दैनिक जीवन में इसके प्रयोग को बढ़ाए। उन्होंने कहा कि सोच बदलें और हिन्दी जो भावों की भाषा है उसका सम्मान करें और तरक्की करें।

इस अवसर पर हिन्दी साहित्य अकादमी एवं सोहन लाल डी.ए.वी. शिक्षा महाविद्यालय में कविता पाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। सभी विद्यार्थियों ने इस प्रतियोगिता में बढ़ चढ़ कर भाग लिया। इस कविता पाठ आए हुए अतिथियों, उपस्थित अध्यापक अध्यापिकाओं और छात्राध्यापकों ने हिन्दी दिवस का शुभ सन्देश के माध्यम से चार्ट पर उकेरा। इस अवसर पर महाविद्यालय के सभी अध्यापकगण ने अपनी उपस्थिति देकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

डी.ए.वी एडवर्ड गंज मलोट में प्रदर्शनी आयोजित

डी.ए.वी. एडवर्ड गंज सी. सै. पब्लिक स्कूल, मलोट, द्वारा एक दिवसीय प्रदर्शनी (प्रत्येक विषय) का आयोजन किया गया। प्रदर्शनी की अध्यक्षता विद्यालय की स्थानीय प्रबन्धक कमेटी के अध्यक्ष श्री कृष्ण कुमार छाबड़ा ने की।

प्रदर्शनी का उद्घाटन रामचन्द्र शास्त्री के ब्रह्मत्व में हवन– यज्ञ कर किया गया। हवन के यजमान स्वयं श्री कृष्ण कुमार छाबड़ा जी थे।

शेष पृष्ठ 12 पर ☞

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. १

संपादक – पूनम सूरी

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार, 24 सितम्बर 2017 से 30 सितम्बर 2017

हम तेरे सम्मुख मूढ़ हैं

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

मूरा अमूर न वयं चिकित्वो, महित्वमग्ने त्वमङ्ग वित्से।
शये वव्रिश्चरति चिह्वयाऽदन्, रेरिह्यते युवतिं विश्पतिः सन्।।

ऋग् १०.४.४

ऋषिः **त्रितः आप्त्यः**। देवता **अग्निः**। छन्दः **त्रिष्टुप्**।

● (**अङ्ग**) हे, (**अमूर**) अमूढ़, (**चिकित्वः**) ज्ञानी, (**अग्ने**) परमेश्वर!, (**मूराः**) मूढ़, (**वयं**) हम, (**महित्वं**) महत्ता को, (**न**) नहीं [जान पाते]।, (**त्वं**) तू, (**वित्से**) जानता है। [हमारा], (**वव्रिः**) रूपवान् आत्मा, (**शये**) सोया पड़ा है, (**जिह्वया**) जिह्वा [आदि इन्द्रियों] से, (**अदन्**) भोग करता हुआ, (**चरति**) विचरता है, (**विश्पतिः सन्**) राजा होता हुआ [भी], (**युवतिं**) प्रकृति–रूप युवति को, (**रेरिह्यते**) अतिशय पुनः–पुनः चाट रहा है।

● हे अग्ने! हे तेजोमय ज्ञानी प्रभु! हम मूढ़ हैं, तुम अमूढ़ हो। हम तो यह भी नहीं जानते कि 'महत्ता' किसका नाम है, महत्त्व प्राप्त करना किसे कहते हैं। हम तो समझते हैं कि सांसारिक दृष्टि से महिमाशाली होना, हाथी, घोड़े, रथ, सेवक आदि का स्वामी हो जाना ही महत्ता है। हमारा तो विचार है कि नचिकेता को यम ने जिस सांसारिक धन–दौलत, पुत्र–पौत्र, भूमि के राज्य आदि सम्पत्ति के प्रलोभन में फँसाना चाहा था, उस सम्पत्ति को पा लेना ही महत्ता है। पर हम मूढ़ अज्ञानियों के ऊपर रहनेवाले अमूढ़ ज्ञानी तुम जानते हो कि सच्ची 'महत्ता' क्या है।

हमारा रूपवान् आत्मा सोया पड़ा है, उसे यही चेतना नहीं है कि मैं किसलिए इस शरीर में आया हूँ, मेरा लक्ष्य क्या है मुझे किधर जाना है। वह जिह्वा आदि इन्द्रियों से निरन्तर भोगों को भोगने में आसक्त हुआ विचर रहा है और इस भोग भोगने में ही अपने जीवन की इतिश्री मान बैठा है। भगवान् ने उसे 'विश्पति' बनाया है, शरीर–नगरी का राजा बनाया हैं, जिसमें मन, बुद्धि, प्राण, इन्द्रियाँ आदि अनेक प्रजाएँ निवास करती हैं। उसे इस शरीर–नगरी को ईश्वरीय साम्राज्य बनाना चाहिए था, अध्यात्म–साधना द्वारा आध्यात्मिक दृष्टि से उन्नत राष्ट्र बनाना चाहिए था। शरीर–राष्ट्र को भोगों से जर्जर न कर सबल, सप्राण और समनस्क करना चाहिए था। पर धिक्कार है इस आत्मा को! यह तो एक 'युवति' को चाट रहा है, अतिशय पुनः–पुनः चाट रहा है। प्रकृति ही यह युवति है जो नटी बनकर आत्मा को अपने साथ नचा रही है, भोग भुगा रही है। आत्मा प्रकृति को चाट रहा है, प्रकृति आत्मा को चाट रही है। इस प्रकार आत्मा लौकिक भोग–विलासों में आनन्द ले रहा है।

हे मेरे आत्मन्! इस मूढ़ता को त्यागो, अपने अन्दर ज्ञान की ज्योति जगाओ, 'सच्ची महत्ता क्या है' इसे जानो, सोते से उठ खड़े हो, इन्द्रियों के वशीवर्ती न हो, अपितु इन्द्रियों के स्वामी बनो। प्रकृति को न चाटकर परम प्रभु के अमृत–रस का आस्वादन करो। तुम्हारा उद्धार होगा, तुम महिमाशाली बन जाओगे। ❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

अमृत-पान

● महात्मा आनन्द स्वामी

स्वामी जी ने रेलवे स्टेशन की खाली गाड़ी और भरी गाड़ियों का उदाहरण देते हुए कहा कष्ट है! लोग प्रतिदिन स्टेशनों पर ऐसे दृश्य देखते हैं फिर भी अपने जीवन को सफल बनाने के लिए इनसे शिक्षा ग्रहण नहीं करते। कहो! तुम किनमें हो? खाली खड़ी गाड़ियों में विश्राम करने वाले या लक्ष्य पर पहुँचाने वाली भरी हुई गाड़ियों में सवार होने वाले?

दूसरी कथा में स्वामी जी ने कहा कि माली द्वारा फूलों से इत्र निकालकर नाली में फैंकने का उदाहरण देते हुए कहा कि क्या हम सचमुच माली की भांति आचरण नहीं कर रहे। कितने लोग हैं जो ब्रह्मचर्य का पालन करते हैं और इत्र से भी बहुमूल्य वीर्य की रक्षा करते हैं। वीर्य शरीर की ज्योति है। यह अत्यन्त परिश्रम से तैयार होता है। परन्तु मस्तिष्क का पागलपन देखिए कि बहुमूल्य वस्तु को व्यर्थ जाने दिया जाता है और ब्रह्मचर्य के उपायों पर आचरण नहीं किया जाता।

आगे पढ़ेंगे दो लघु कथायें

पहला और पिछला चुटकुला

हम छोटे बच्चे थे। उर्दू की प्रथम पुस्तक में चुटकुला पढ़ा करते थे। एक चुटकुला बड़ा रोचक था। पढ़–पढ़कर ठहाके लगाते थे। सुन–सुनकर मज़ाक उड़ाते थे। चुटकुला यह था–

एक व्यक्ति का घोड़ा चोर चुरा ले गये। मित्र, रिश्तेदार, मिलने वाले दुःख और सहानुभूति प्रकट करने आये। आने वालों ने देखा कि वह परमात्मा का धन्यवाद करने के लिए झुका हुआ था। मित्रों ने चकित होकर पूछा– "परमात्मा का धन्यवाद करने का यह कौन–सा अवसर है?" उसने कहा– "मित्रों! परमात्मा को धन्यवाद दो कि मैं घोड़े पर सवार नहीं था, अन्यथा चोर मुझे भी ले जाते।"

इस चुटकुले को पढ़–पढ़कर हम हँसते थे, परन्तु क्या पता था कि बड़े होकर हमें स्वयं इस प्रकार का मूर्तिमान चुटकुला बनना पड़ेगा। अब सोचते हैं, विचार करते हैं कि कहीं वह व्यक्ति हम ही तो नहीं।

परमात्मा ने सवारी के लिए हमें एक घोड़ा दिया और कहा– प्यारो! जाओ, इस पर सवार होकर मुक्ति के धाम पहुँच जाओ, परन्तु हम क्या आचरण करने लगे। हम अपने–आपको ही घोड़ा समझने लग गये। घोड़े का लालन–पालन और सुरक्षा तो निःसन्देह आवश्यक थी, परन्तु हमने घोड़े की ही आवश्यकताओं को पूरा करने और इसी की इच्छाओं के अनुसार काम करना आरम्भ कर दिया। घोड़े की आँखों ने कहा– मुझे सुन्दर दृश्य दिखाओ। हमने आँखों को वहीं पहुँचा दिया– "लो, देखो।"

घोड़े ने कानों ने कहा– "मुझे मीठी आवाज़ सुनाओ। ताल–सुर से गाते हुए रागियों के पास ले चलो। छनाछन की भली लगने वाली आवाज़ के पास ले चलो।" हमने कानों के लिए सारे सामान उपलब्ध कराये।

नाक ने कहा– "सबके लिए काम करते हो मेरे लिए उत्तम सुगन्धियाँ उपलब्ध क्यों नहीं कराते? मैं बिगड़ जाऊँगी।" हमने तुरन्त इत्र उपलब्ध कराये।

जिह्वा बोली– "मेरे चस्के का भी ध्यान है? मुझे तो उत्तमोत्तम स्वादिष्ट खाने चाहिएँ। यदि खाने स्वादिष्ट न हुए तो मैं खाऊँगी ही नहीं। भूखे मर जाओगे।" हमने इसके लिए स्वादिष्ट खाने तैयार किये। बेज़बानों के गले पर छुरी फेरी। उनके कबाब बनाये और जिह्वा का चस्का पूरा किया।

उधर से अवकाश मिला तो दिल ललचाया। वह कहीं और ही ओर ले भागा। इसी धन्धे में और इन्हीं स्वागत–सत्कारों में हम अपने–आपको भूल गये। परमात्मा ने घोड़ा हमें सवारी के लिए दिया था, परन्तु घोड़ा हम पर सवार हो गया। यही नहीं, प्रत्युत हमने अपने–आपको घोड़ा समझना आरम्भ कर दिया।

यही तो चुटकुला है। अब यदि इस घोड़े को कोई चुरा ले जाए, तो हम समझते हैं कि हम भी फाँसी पर लटक रहे हैं। यह चुटकुला नहीं तो और क्या है?

जो पहले चुटकुले पर अट्टहास करते थे अब इस पर भी हँसो, परन्तु हँसोगे क्या खाक! पश्चात्ताप करो, रुदन करो और समझो कि तुम घोड़े नहीं हो, घोड़े के सवार हो। तुम्हारा उद्देश्य घोड़े को ही खिलाना–पिलाना और इसी में अपना परिश्रम, अपना रुपया और धन नष्ट करना नहीं है, प्रत्युत उसका उचित लालन–पालन करते हुए इस पर सवार होकर मुक्तिधाम तक पहुँचना है। जो लोग इस उद्देश्य की ओर ध्यान नहीं देते, वे उर्दू की प्रथम पुस्तक की भाँति चुटकुला बनते हैं। उनकी अवस्था दया करने योग्य है!

शेष पृष्ठ 03 पर ☞

वेद के प्रादुर्भाव की कहानी–7

● भद्रसेन

ओ३म् येन देवा न वियन्ति नो च विद्विषते मिथः। तत्कृण्मो ब्रह्म वो गृहे संज्ञानं पुरूषेभ्यः।। अथर्व. 3,30,4

शब्दार्थ– वः– तुम्हारे **गृहे=** घर में, आवास स्थलों, ग्रामों, नगरों में **पुरूषेभ्यः=** जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पूर्णता क्षेत्र में पूर्णता चाहने वालों के लिए **तत्=** उस सर्वप्रसिद्ध, सर्वपरिचित **ब्रह्म=** लाभ, प्रभाव की दृष्टि से जो महान है, ऐसे वेद ज्ञान को, जो कि **संज्ञानम्=** सम्यक ज्ञान है, जिस में भ्रम, संशय, भय, विपरीत ज्ञान नहीं है। ऐसे सुनिश्चित संज्ञान को, ऐसे विशेषण युक्त ब्रह्म को **कृण्मः=** करते हैं, देते हैं, सामने लाते हैं। **येन=** जिस ज्ञान, प्रेरणा के प्रभाव से, व्यवहार में लाने से देवाः समझदार, ऊंचा उठने की चाहना वाले न **वियन्ति=** उल्टे रास्ते पर नहीं जाते, सदा सीधे=सच्चे कार्य ही करते हैं च= और **मिथः=** परस्पर, एक=दूसरे सामाजिक सदस्य से, मित्र से, भाई–बहन आदि रिश्ते वालों से न–उ– **विद्विषत=** किसी भी ढंग से द्वेष– हानि, नुकसान पर प्रसन्न नहीं होते।

व्याख्या– पुरूषेभ्यः– सारे मनुष्य भौतिक बौद्धिक आदि क्षेत्रों में प्रगति चाहते हैं, पूर्ण होना चाहते हैं। अतः उनकों पुरूष नाम से पुकारा जाता है। यह पूर्ण प्रगति जिस साधन से होती है, उसी को मन्त्र में ब्रह्म, संज्ञानं, संज्ञानं ब्रह्म कहा है। यह ईश्वर का सुनिश्चित ज्ञान है। ईश्वर का रचा यह प्रत्यक्ष संसार अपनी एक–एक रचना के द्वारा बता रहा है, कि यह सकल गुण सम्पन्न कलाकार की अनोखी कला है। जैसे कि कहा जाता है– पत्ता–पत्ता तेरा पता दे रहा है। अतः इन वायु सूर्य, जल आदि प्राकृतिक पदार्थों से सिद्ध होता है, कि इस संसार का रचनाकार, व्यवस्थापक, नियामक हर तरह से पूर्ण, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक आदि गुणयुक्त है। अतः उस का ज्ञान भी प्रत्येक प्रकार से पूर्ण है। तभी तो कहा गया है– 'वेद कहें इक बात' अर्थात वेद सुनिश्चित, स्पष्ट बात कहते हैं। वे भ्रम, संशय, मिथ्या भरी बात नहीं करते।

येन देवा न वियन्ति– ऐसे वेद ज्ञान की शिक्षाओं से जो शिक्षित हो जाते हैं। इन प्रेरणाओं को अपने जीवन में जो अपना लेते हैं। वे फिर सदा सर्वत्र सही राह पर ही चलते हैं। वे स्वार्थ, लोभवश, नासमझी करके भी उलटी राह पर नहीं चलते। औरों की तो बात ही क्या? एक चोरी करने वाला भी दिल से यही चाहता है कि कोई भी, कभी भी, कहीं भी मेरी चीज की चोरी, छीना– झपटी न करें। अतः चोरी छीना– झपटी स्पष्ट रूप से उलटा कर्म है। पुनरपि स्वार्थ और लोभ के कारण व्यक्ति आज अनेक प्रकार से चोरी जैसे उलटे कर्म कर रहें हैं।

कहीं दुकानदार उचित भाव, सही भार उचित माल की चोरी कर रहा है। तो कहीं कार्यालय के कर्मचारी टाल–मटोल, समय–श्रम बचाने की चोरी कर रहे हैं। कहीं विविध उद्योगों में मालिक/ मा–लीक–/ धन बचाने, कम वेतन देने, अधिक काम लेने के उपाय वर्त रहे हैं। तो दूसरी ओर मजदूर, नौकर / नो–कर/ वर्ग काम से बचने, माल को इधर– उधर करने आदि के रूप में चोरी करते हैं। हर एक अपने–अपने ढंग से स्वार्थपूर्ति में ही जुटा हुआ है।

मन्त्र में मुख्य रूप से दूसरी बुराई– **नो च विद्विषते मिथः–** के रूप में द्वेष– परस्पर जलन, हानि पहुंचाने या दूसरे के नुकसान से खुश होने की है या इन के कारण तू–तू, मैं–मैं से शुरू होकर लड़ाई– झगड़े के रूप में सामने आती है। कहीं मानसिक, वाचिक रूप में जलन से यह सब हो रहा है, तो कहीं व्यावहारिक रूप से शरीर के अंगों से और कभी अनेक तरह के हथियारों से झगड़ों का जाल फैला हुआ दिखाई देता है।

सारी सामाजिक बुराईयों को यहां दो रूपों में चित्रित किया गया है। विविध न्यायालयों में सारे अभियोग अधिकतर इन दोनों कारणों से ही सामने आ रहे हैं। मन्त्र बड़े विश्वास से कह रहा है कि ये सारे विवाद, बुराईयां वेदज्ञान से शिक्षित होने पर अपनाने पर, समझे हुए में नहीं होती। हाँ, अधूरा, कोरे शब्द ही गुंजाने वाला 'थोथा चना बाजे घना' की कहावत को चरितार्थ करता है। हाँ, अनेक स्वयं न चाहते हुए भी अपनी ओर से कुछ न करने पर भी विवाद में व्यर्थ घसीट लिये जाते हैं। ऐसी स्थिति में एक पक्ष का द्वेष वहां कारण होता है। दूसरा पक्ष सामाजिकता के कारण कष्ट उठाता है।

वेद ने ईर्ष्या–द्वेष को जंगल की आग से उपमा दी है। जैसे यह आगे से आगे फैलती बढ़ती है। आप तो जलती ही है, पर अपने साथ दूसरे को भी जलाती है। अथर्व 7, 45,2

मन्त्र इन शब्दों से प्रेरणा, सन्देश दे रहा है कि जैसे प्रकाश से अन्धकार दूर हो जाता है। ऐसे ही वेदज्ञान से सर्वविध अन्धविश्वास, अन्धेरा दूर हो जाता है। जैसे हमारी आखें बाह्रय प्रकाश की सहायता से अपना कार्य करती हैं। ऐसे ही हमारी अन्दर की बुद्धिरूपी आंख भी ज्ञानरूपी आन्तरिक प्रकाश से अपनी सोच को उभारने में समर्थ होती है। यह ज्ञान वेद के माध्यम से ही पहले– पहल संसार में सामने आया।

विशेष– मूलतः यह मन्त्र पारिवारिक वर्णन का है। अतएव संज्ञान– पारिवारिक दृष्टि से जो सांझा हित है, संयुक्त बातें हैं। उस सामूहिक ब्रह्म– महान रहस्य को सामने लाया जा रहा है। अतः पारिवारिक दृष्टि से कृण्मः उत्तम पुरूष बहुवचन है। जिस से परिवार का सांझा संकल्प सामने आ रहा है। मनुस्मृति, गीता में ब्रह्म शब्द वेद के लिए भी आया है। वेद ने आ वदानि, अभिमन्त्रये के रूप में उत्तम पुरूष एकवचन का अपने सम्बन्ध में प्रयोग किया है।

तत् ब्रह्म– पहले–पहल ज्ञान कैसे– आज तो यह नियम निर्बाध रूप से चल रहा है कि हर एक अपने सिखाने वाले से सीखता है। पर जब भी संसार शुरू हुआ, तब आज की तरह पढ़ाने वाले नहीं थे। अतः सोचने वाली बात यह है कि तब पढ़ाई कैसे प्रारम्भ हुई? उस समय केवल संसार को बनाने वाला ही विद्या का ज्ञाता था। आज की तरह और कोई विकल्प न होने से ईश्वर ने ही संसार सर्जन के सदृश ज्ञान भी दिया इसी लिए जितने भी ईश्वर को मानने वाले आस्तिक हैं वे सभी एक स्वर से यह मानते हैं कि संसार के सूर्य आदि समान ज्ञान का प्रारम्भ भी ईश्वर ने ही किया है। इसीलिए सभी आस्तिक अपने धर्मग्रन्थ को ईश्वर का ज्ञान, देन मानते हैं।

हाँ, ईश्वर ने सूर्य आदि भौतिक पदार्थ सारे के सारे संसार के प्रारम्भ में बनाए हैं। इसीलिए ये सारे समान रूप से सभी को प्राप्त हो रहे हैं। वेद ने इसीलिए इन प्राकृतिक पदार्थों के लिए जहां प्रथमज का प्रयोग किया है, वहां वेद के लिए भी अनेकवार प्रथमज शब्द का प्रयोग किया है। अर्थात ये सारे संसार के शुरू में पैदा हुए हैं।

182 शालीमार नगर, होशियारपुर पंजाब 146001

☞ *पृष्ठ 02 का शेष*

अमृत–पान ...

तैयार हो? बंदूक का निशाना बनने के लिए

गुरु गोविन्दसिंह जी मालवा प्रदेश के भ्रमण में व्यस्त थे। इसी समय मालवा का एक सरदार डाला आपके पास पहुँचा और बोला– "महाराज! आपने आनन्दपुर के प्रसिद्ध युद्धों में मेरे बलिदानी, वफ़ादार और निर्भीक जवानों को स्मरण क्यों न किया, जो इस प्रकार से अपना बलिदान करने के लिए तैयार थे।"

गुरु गोविन्दसिंह ने इस श्रद्धा भरे वाक्य को सुना और मौन रहे। एक दिन गुरु गोविन्दसिंह को किसी ने एक दुनाली बन्दूक भेंट के रूप में भेजी। गुरु गोविन्दसिंह जी ने कहा– "आज इस डाले के बलिदानी वीरों की परीक्षा हो जाए तो अच्छा।" डाला को बुलाया गया और कहा– देखो, आज हमारे पास यह दुनाली–बन्दूक आई है। इसका निशाना आज़माने की आवश्यकता है, जिसके लिए एक नौजवान चाहिए और क्योंकि तुमने कहा था कि तुम्हारे पास बहुत–से बलिदानी जवान हैं, इसलिए लाओ आज एक जवान को जिससे इस बन्दूक का निशाना आजमाया जाए कि कैसा निशाना लगाती है।

डाले के बलिदानी नौजवान भी साथ ही थे। डाला ने उनकी ओर आँख उठाकर देखा। सबकी गर्दनें भूमि पर गड़ी हुई थीं। चेहरों पर हवाइयाँ उड़ रही थीं, कलेजा धड़क रहा था। सैकड़ों जवानों में से एक भी तो न निकला जो इस निशाने के सामने अपनी छाती रखने के लिए खड़ा होता।

यह मौन, यह सन्नाटा, भय और निशाना से काँपते और डरते हुए इन नौजवानों का दृश्य देखकर गुरु गोविन्दसिंह ने अपने आनन्दपुरी बलिदानी जवानों को अपना सन्देश पहुँचाया, जो उनके साथ यात्रा पर थे। उसी समय एक व्यक्ति उठा और गुरु गोविन्दसिंह के लक्ष्य निशाने के सामने खड़े होकर निवेदन किया– "महाराज! आज संसार में मेरे जैसा कोई दूसरा सौभाग्यशाली नहीं हैं, जिसका शरीर आपकी बन्दूक का निशाना बने।"

गुरु गोविन्दसिंह ने कहा– "गोली आती है, तैयार हो।" बलिदान के मैदान में खड़े बलिदानी ने अपना सिर झुकाया, परन्तु वह तनिक भी न डगमगाया। लोगों ने देखा कि बन्दूक दाग दी गई और बलिदानी अपने बलिदान में पूरा उतरा है। लोग उसका नाम वीरसिंह बतलाते हैं।

पढ़नेवालो! आर्यसमाज में अपना नाम लिखवानेवालो! जानते हो क्या हुआ। सोचो! तुम डाला के नौजवानों की भाँति तो बलिदानी नहीं हो, जिन्होंने आर्यसमाज में प्रविष्ट होकर वैदिक धर्म के प्रचार का निशाना बनने का प्रण किया हुआ है। सोचो कि यह जो बार–बार निशाना बनने की पुकार होती है, इसके लिए कोई मैदान में निकलता भी है या नहीं। कहीं तुम डाला के बनावटी बलिदानी तो सिद्ध नहीं हो रहे। आज इसी पर विचार करो और बतलाओ कि वीरसिंह– जैसे बलिदानी बनने के लिए तैयार हो या नहीं?

क्रमशः

खजूर और अंगूर – कितने पास कितने दूर

● देव नारायण भारद्वाज

बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर।

पन्थी को छाया नहीं, फल लागे अति दूर।।

खजूर के फल तो मधुर स्वादिष्ट गुणकारी होते हैं। उनकी लालसा से एक व्यक्ति खजूर के पेड़ पर चढ़ता ही चला गया। बहुत ऊपर पहुँचने के बाद खजूर अब भी उसकी पकड़ से दूर थे, तब उसने नीचे की ओर देखा और दंग रह गया। हाय! मैं इतने ऊपर और धरती कितने नीचे। अब तो मैं गिर ही पडूँगा। ईश्वर! मुझे बचाओ। दया करो। फल नहीं चाहिए, मुझे नीचे उतरने में सफल बनाइए। चढ़ते समय तो उसने अपने किसी परिजन–पुरजन की झलक नहीं स्वीकार की, क्योंकि उसके खजूर बँट जाते और उसे कम पड़ जाते, पर यदि वे पेड़ के नीचे खड़े भी रहते तो उसे इतना अधिक भय नहीं रहता, किंतु अब अकेले पड़ जाने पर उसका भय बढ़ता ही जा रहा था। इसीलिए अब उसने परमेश्वर को साझीदार बनाने का निश्चय कर लिया था। खजूर न सही, ईश्वर मुझे बचा लो, मुझे नीचे उतार दो। मैं घर से रुपए लाकर तुम्हारा भोग लगाऊँगा, उसका भय कम हुआ और वह पेड़ के आधे भाग तक उतर आया। सोचने लगा बोल दिया तो सोचे हुए रुपयों के आधे भाग का प्रसाद तो चढ़ा ही दूँगा। ज्यों–ज्यों वह नीचे उतरता गया, उसके बोले गए प्रसाद की मात्रा कम होती गई। अब जब वह कूदकर एकदम नीचे उतर गया तब बोला–''जान बची खजूर भुलाए। उतरे बुद्धू नीचे आए। चढ़ गए हम उतर गये हम, व्यर्थ बुलाये ईश्वर तुम।

जो लोग ऊपर ही ऊपर देखते हैं और नीचे की ओर मुड़ कर झाँकते नहीं, तो उनकी यही दशा होती है कि वे शरीर से नीचे गिरते हैं तो उन्हें थाम लेती है धरती, और जब वे चरित्रहीनता, अनैतिकता भ्रष्टाचार–दुराचार के कारण पतित होकर नीचे गिरते हैं तो धरती माता के लिए हथकड़ी में जकड़कर जाना पड़ता है–बन्दीगृह। वेद माता का कथन है:–

विशां च वै स सबन्धूनां चान्नस्य चान्नाद्यस्य च प्रियं धाम भवति य एवं वेद।।

अथर्व 15.8.3।।

मन्त्राशय यही है कि मनुष्य होने की विद्वता –योग्यता उसके मात्र स्वपोषण में नहीं, प्रत्युत पहले पर पोषण फिर स्वयं पोषण के व्यवहार से परिलक्षित होती है। इसके लिए वह पुरुषार्थपूर्वक जो अन्न–धन्न अर्जित करता है, उसे अधिकाधिक स्वादिष्ट ही नहीं स्वास्थ्यवर्धक व्यंजनों का रूप देकर अकेला ही नहीं, अपने बन्धु बान्धवों के साथ मिलकर उपभोग करता है। इसको परमात्मा का आश्रय तो मिलता ही है, सर्वहितकारी होने से संसार में भी प्रतिष्ठित हो जाता है। गाँव देहात में रहने वाले श्रमजीवी लोग–''मेरे बीसों नाखूनों की कमाई है'' कहकर अपने उत्पादन व उपलब्धि पर गर्व करते हैं। वे झोंपड़ी में रह लेते हैं, साधारण शाक रोटी खा लेते हैं, किंतु सायंकाल विश्राम के क्षणों में प्रायः दूरदर्शन कम, रामायण चर्चा व कीर्तन कर प्रसन्न रहते हैं, और गहन निद्रा प्राप्त करते व ब्रह्म मुहूर्त में उठकर कर्त्तव्य पथ पर अग्रसर होते हैं। उनका आत्म सन्तोष निम्नांकित दोहे में उमड़ पड़ता है:–

देख परायी चूपड़ी, मत ललचावे जीव।

रूखा–सूखा खाय के, तू ठण्डा पानी पीव।।

उनको लक्कड़ हजम पत्थर हजम जो करते शारीरिक श्रम। इसे आप उनके साथ मत जोड़ देना जो किसी भी रूप में सड़क–पुल व भवन निर्माण कार्य से जुड़े होते, भरपूर वेतन–भत्ता, ग्रहण करते हुए भी लक्कड़–पत्थर–लोहा भी हजम कर जाते हैं, किंतु उन्हें पचता नहीं, और अन्ततः बेड़ियों में जकड़कर मुँह छुपाते हुए पकड़े जाते हैं। एक किसान प्रभात बेला में अपने खेत पर काम करने को निकला। उसकी पत्नी ने मोटे–मोटे आठ टिक्कर (रोटी) प्याज–चटनी सहित उसके प्रातराश एवं मध्यकाल प्राश के लिए बाँध दिए थे। उसके खेतों के समीप एक कुआँ व गलियारा था, जहाँ बैठकर यात्री किंचित विश्राम करके आगे प्रस्थान कर जाते थे। वहीं पर बैठकर एक योग्य वैद्य जी अपनी थकान मिटा रहे थे, उन्होंने देखा कि किसान ने स्वादपूर्वक चार रोटी खा ली और ऊपर से एक लोटा पानी पी लिया। वैद्यजी ने किसान को परामर्श दिया–जो भोजन के तत्काल बाद भरपूर पानी पीता है वह बीमार होकर अल्पकाल में मर जाता है। किसान ने पूछा–वैद्य जी बताइए फिर किस समय पानी पीना चाहिए। वैद्यजी ने कहा–प्यास लगे तो भोजन के बीच पानी पी सकते हैं। किसान ने शेष बची चारो रोटी खा ली और बोला अब ठीक है वैद्य जी! उन्होंने हँसते हुए कहा–तुझे कुछ नहीं होगा मित्र–श्रम जीवी दीर्घ जीवी होता है। किंचित चिन्ता मत कर।

सायंकाल उसी गलियारे से बचपन के दो मित्र जिधर जा रहे थे, उधर से एक सन्त इधर आ रहे थे। मित्रो ने पूछा–महात्मन! आगे कोई खतरा तो नहीं है? महात्मा ने बताया–खतरा है, मार्ग में दो नागिन पड़ी हैं, उनसे बचकर निकल जाना, अन्यथा वे तुम्हें डस लेंगी। यहाँ पर दोहे का एक शब्द 'चूपड़ी' ने अपना अर्थ बदल लिया। किसी महिला यात्री की एक अंगूठी–एक जंजीर उसके शरीर से चू पड़ी अर्थात् गिर गयी थी। मित्रो ने कहा–महात्मा भी कितने मूर्ख होते हैं। यहाँ नागिन तो कहीं नहीं हैं, शायद इन आभूषणों को ही महात्मा नागिन बता रहे होंगे। पुराने मित्र परस्पर इस बात पर गुर्राने लगे, कौन सोने की जंजीर लेगा, अँगूठी इसी बँटवारे में दोनों लड़ मरे। चू पड़ी के इसी आशय को आगे बढ़ाते हैं। पहले जो खजूर को ऊपर जाकर तोड़ने के खतरे की चर्चा हुई, आगे उनकी चर्चा है, जिनको तोड़ने के लिए खजूर की भाँति ऊपर चढ़ना नहीं पड़ता। इनमें से एक है अंगूर–जिसकी लता होती है, इसके फलों को सुगमता से तोड़ लिया जाता है, दूसरा है महुआ, जो होता तो पूरा वृक्ष है, किंतु इसके फल पककर मधुर हो जाते हैं; और स्वतः ही टपकते रहते हैं। इन्हें तोड़ने के लिए खजूर पर चढ़कर लंगूर नहीं बनना पड़ता है। सभी वृक्ष वनस्पतियाँ मानव प्राणियों की संजीवनी ऊर्जा का आधार व जीवन–माधुर्य प्रदाता हैं, उनका यथोचित उपयोग चाहिए। ऊर्जा का आधार व जीवन–माधुर्य प्रदाता है, उनका यथोचित उपयोग चाहिए।

मधु वाताऽऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः।।

(यजु. 13.27)

पं. हरिशरण सिद्धान्तालङ्कार ने मनोहारी सार यों प्रस्तुत किया है। जो अपने जीवन में सब क्रियाएँ ऋत के अनुसार करते हैं वही ऋतायन हैं। (ऋत=Right) उनकी सब क्रियाएँ ठीक स्थान व ठीक समय पर होती हैं। ऋत का अर्थ यज्ञ भी है। इनका जीवन यज्ञिय होता है। ये लोग, स्वार्थ से ऊपर उठकर यज्ञमय जीवन वाले होते हैं। सर्वभूत हिते रतः"होते हैं। इस (ऋतायते) ऋतमय जीवन वाले के लिए (वाताः) वायुये मधुर होकर बहती हैं, हानिकार नहीं होती। (सिन्धवः) नदियाँ भी इनके लिए मधुर बन कर (क्षरन्ति) चलती हैं। नदियों का जल सदा स्वास्थ्यवर्धक होता है। (नः) हम ऋत का पालन करने वालों के लिए (ओषधीः) ओषधियाँ (माध्वीः) माधुर्य वाली (सन्तु) हों। यह तो रही वेद की दिशा, किंतु किसी मान्य हिन्दी कोश को उठाकर देख लीजिए, तो वहां लिखा मिलेगा–माध्वी अर्थात् मद्य, महुए की बनी मदिरा। इसी प्रकार अंगूर के पर्याय द्राक्षा से शारीरिक क्षीणता निवारक द्राक्षासव तो कम बनता है, मदिरा अधिक बनती है, जिसकी सर्व प्रचलित संज्ञा पड़ गयी है–अंगूर की बेटी।

मदिरा के कारण देश में सर्वत्र हाहाकार मचा हुआ है, जिसका पता आप दूरदर्शन शृंखलाओं से लगा सकते हैं, जहाँ ग्राम–नगर की नारियाँ–पुत्री–पुत्रवधूएँ हाथों में लाठी–डण्डा लेकर इसके विरोध में सत्याग्रह करती हैं। वे राजनेता भी हैं जो शासनासन से मद्य पर प्रतिबन्ध लगाते हैं, तो विपक्षी प्रतिबन्ध में रोड़े अटकाते हैं। इन्हीं दुर्व्यवस्थाओं के कारण एक मदिरा ही क्या अपमिश्रण से ग्रस्त सभी खाद्य विषैले हो रहे हैं। पापनाशिनी गंगा को धनलोलुप लोगों ने तापशापिनी बना दिया है। अतिथि परिव्राट महात्मा से उपदेश की इच्छा से सम्राट उद्यान में पहुँच गए। अभिवादन के बाद बोले–स्वामिन! मुझे कुछ शिक्षा दीजिए। महात्मा ने कहा–ठीक है, शिक्षा मैं नहीं आप स्वयं देंगे। यदि आप रेगिस्तान में असह्य प्यास के मारे व्याकुल हो उठें और श्रीमान को कोई आधे राज्य के बदले एक लोटा पानी दे, तो लोगे कि नहीं? सम्राट बोल पड़े, अवश्य ही लेना पड़ेगा। महात्मा ने फिर पूछा–यदि उस पानी को पीकर आपका पेट फूलने लगे और मूत्र रुक जाए। वेदना से आप कराह उठें। आपको स्वस्थ करने के लिए कोई वैद्याचार्य आपके आधे राज्य की माँग करें, तो आप क्या करेंगे? स्वामिन! ऐसी दशा में शेष बचा आधा राज्य भी दे दूँगा। महात्मा बोले ऐसे राज्य–ऐश्वर्य पर कभी घमण्ड नहीं करना चाहिए जो एक लोटे पानी और फिर शरीर से उसका विकार दूर करने के लिए बिक जाए। राज्य करना चाहिए किंतु निरभिमानिता के साथ राज्य–प्रजा की पितृवत पालना के लिए करना चाहिए। कवि ने यही सीख दी है।

रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून।

पानी गए न ऊबरे, मोती–मानुष–चून।

'वरेण्यम्' अवन्तिका (प्रथम)
रामघाट मार्ग अलीगढ़ (उ.प्र.)

राष्ट्र निर्माण हेतु संन्यासाश्रम की आवश्यकता

● डॉ. बिजेन्द्र पाल सिंह

अनेक व्यक्ति कहते हुए सुने जाते हैं कि साधु संन्यासी को इस जगत से क्या लेना देना राजनीति से, समाज से, क्या लेना देना, उन्हें तो पर्वतों की कन्दराओं में जाकर एकान्त वास करना चाहिए। यह उनका विचार एक दम असत्य है संन्यासी का तो संसार के लिए कर्त्तव्य और अधिक महत्व पूर्ण हो जाता है इस प्रकरण पर हमें महर्षि दयानन्द की विचार धारा पर ध्यान देना चाहिए कि संन्यासी का महत्व तो व्यक्ति समाज और राष्ट्र के लिए ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व के लिए महत्व पूर्ण है।

''जैसे शरीर में सिर की आवश्यकता है वैसे ही आश्रमों में संन्यासाश्रम की आवश्यकता है क्योंकि इसके बिना विद्या धर्म कभी नहीं बढ़ सकता और दूसरे आश्रमों को विद्या ग्रहण ग्रहकृत्य और तपश्चर्यादि का सम्बन्ध होने से अवकाश बहुत कम मिलता है पक्षपात छोड़कर वर्त्तना दूसरे आश्रमों को दुष्कर है। जैसे संन्यासी सर्वतोन्मुखी होकर जगत् का उपकार करता है, वैसा अन्य आश्रम नहीं कर सकता क्योंकि संन्यासी को सत्य विद्या से पदार्थों के विज्ञान की उन्नति का जितना, अवकाश मिलता है उतना अन्य आश्रम को नहीं मिल सकता। परन्तु जो ब्रहमचर्य से संन्यासी होकर जगत् को सत्य शिक्षा करके जितनी उन्नति कर सकता है उतनी गृहस्थ वा वानप्रस्थ आश्रम करके संन्यासी नहीं कर सकता''– सत्यार्थ प्रकाश पञ्चम समु.

जब देश कठिनाइयों में घिरा हो दानवों द्वारा नरसंहार किया जा रहा हो पाप व अत्याचार बढ़ रहे हों जैसा आज हो रहा है, दहेज हत्याएँ सामान्य सी बात हो गयी थी, महिला उत्पीड़न बढ़ गया था, बलात्कार हो रहे थे। हत्या लूट चोरी घोटाले भ्रष्टाचार अधिकारियों की तानाशाही, रिश्वत खोरी बढ़ गयी, जिसे किसी ने रोकने का प्रयत्न न किया, जो भी आता जनता की ही लूट करता, जनता को उन्होंने अपने उपभोग की वस्तु बनाया। वह जन प्रतिनिधि जनता के लिए कार्य नहीं करते थे जनता का हित नहीं करते थे अपितु जनता से अपना लाभ लेना चाहते थे और अनेक अधिकारी जन प्रतिनिधि जनता का शोषण करते थे।

ऐसी स्थिति में जब प्रजा कष्ट में हों और चारों ओर गुण्डागर्दी हो क्या संन्यासियों का चुप बैठना ठीक है। मेरा विचार है कदापि नहीं, चाहे कहीं भी हों संन्यासियों को अवश्य आगे आना चाहिए और यहां तक कि राजनीति की बागडोर अपने हाथ में लेकर राज्य व्यवस्था, दण्ड व्यवस्था सभी को सुधारने का प्रयत्न करना चाहिए।

आज भी अनेक जो साधु संन्यासी राजनीति में हैं उन्होंने समाज की दशा व दिशा दोनों बदल दी हैं। स्वच्छ भारत का निर्माण अवश्य होगा जहाँ बाहर की स्वच्छता तो होगी परन्तु जो मन की स्वच्छता होनी चाहिए वह भी होगी।

प्राचीन काल में आश्रम व्यवस्था का पूर्ण रूपेण पालन होता था और संन्यासाश्रम द्वारा गृहस्थ से लेकर राजा महाराजाओं तक वेद ज्ञान का प्रचार व जीवन में वेद के आचरण पर ज्ञान दिया जाता था। यदि राजा या गृहस्थ में कोई दुर्गुण है अथवा संस्कारों आचार व्यवहार आदि में कोई त्रुटि आ गयी है तो संन्यासी उन कमियों का समाधान करते थे, कठिन से कठिन समस्याओं का समाधान संन्यासी गण किया करते थे क्योंकि संन्यासी का गुण अर्थात धर्म पक्षपातरहित, न्यायाचरण, सत्य का ग्रहण, असत्य का परित्याग, वेदोक्त ईश्वर की आज्ञा का पालन, परोपकार सत्य भाषणादि लक्षण सब आश्रमियों के हैं।

आज के समय में संन्यासाश्रम की अत्यधिक आवश्यकता है क्योंकि समाज में अज्ञानता का घनघोर अन्धकार है। चारों और पाखण्ड व अन्धविश्वास वृद्धि पर है, तान्त्रिकों का जाल चारों ओर फैल रहा है गुरुड्म बढ़ रहा है नित्य नए ढोंगी कपटी पाखण्डी गुरुओं का ठगी का प्रभाव बढ़ रहा है जातिवाद ऊँच नीच की खायी बढ़ रही है। सामान्य जन अपराधों से घबराया हुआ है ऐसे में संन्यासी गण ही राष्ट्र में शान्ति स्थापित कर सकते हैं हालाँकि संन्यासी और राजा की कोई तुलना नहीं परन्तु राजा का मान उसके देश में ही होता है। परन्तु संन्यासी की पूजा सर्वत्र होती है संन्यासी का स्थान बहुत ऊपर है। **''विद्वत्वं च नृपत्वं च नैव तुल्यं कदाचन स्वदेशे पूज्यते राजा, विद्वान सर्वत्र पूज्यते।।''**– चाणक्य नीति शास्त्र

आज भारत को स्वच्छ भारत निर्माण करना है तो सन्यासाश्रम को महत्त्व देना होगा क्योंकि संन्यासाश्रम से ही सर्वत्र सुशिक्षा व ज्ञान विज्ञान का प्रसार होगा, आचरण में सुधार होगा। प्राचीन काल में वैदिक धर्म का प्रचार संन्यासियों के द्वारा ही होता था। आज ऐसे वैदिक धर्मी संन्यासी अत्यल्प संख्या में है, फिर भी अनेक संन्यासी साधु ऐसे भी हैं जहाँ थोड़ा या अधिक वेद ज्ञान का प्रकाश हृदयों में है, उनके अन्दर राष्ट्रीयता की भावना है, उनके मन में पक्षपात नहीं अपितु मानवता के लिए ही कार्य करते व सोचते हैं वह भी आर्य संन्यासी ही हैं। वैसे भारत में साधुओं के अनेक सम्प्रदाय हैं वे अपने–अपने आचार्यों के वचनों के अनुसार ही चलते हैं परन्तु संन्यासी वही है–

'' जो स्वयं धर्म में चल कर सब संसार को चलाते हैं जो आप और सब संसार को इस लोक अर्थात् वर्तमान जन्म में, परलोक अर्थात् दूसरे जन्म में स्वर्ग अर्थात् सुख का भोग करते कराते हैं। वे ही धर्मात्मा जन सन्यासी और महात्मा है–''। – स.प्र. पञ्चम समु.

ऐसे अनेक साधु सन्यासी थे जिन्होंने स्वतन्त्रता संग्राम में कार्य किया क्रान्ति की ज्वाला को जगाया घर–घर जा कर क्रान्ति का बिगुल बजाया और अपने जीवन की आहुति भी दी। आज भी ऐसे अनेक साधु, विद्वान व संन्यासी व साध्वी नारियाँ राष्ट्र हित में कार्य कर रहे हैं इनसे भारत की स्वच्छता का स्वप्न अवश्य पूर्ण होगा। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भारत के गौरव व उत्थान हेतु बहुत पहले से क्रान्ति आरम्भ कर दी थी।

आदमी अधर्म पाप अत्याचार अनाचार करने से डरेगा भौतिकवाद की चमक दमक से दूर अध्यात्म के मार्ग का अनुसरण करेगा, वेद के मार्ग पर चलेगा। अपने ही हित की बात न सोच कर सबके हित की सोचेगा।

यह सब देखते हुए सन्यासी का समाज व राष्ट्र पर बहुत बड़ा उपकार होता है ऐसे में सन्यासी अपना परिवार तो त्याग देता है परन्तु संसार के उपकार के लिए कार्य करता है जिससे अधर्म छोड़ लोग धर्म की ओर चलें। अन्धकार से प्रकाश की ओर चलें। अज्ञानता से ज्ञान की ओर चलें। राष्ट्रहित में संन्यासाश्रम का अपना विशेष महत्व है। इस हेतु महर्षि दयानन्द सरस्वती का विचार आज भी प्रासंगिक है।

चन्द्र लोक कालोनी
खुर्जा बुलंदशहर उ.प्र.

वर्तमान उग्रवाद में श्री राम जीवन की प्रासंगिकता

● डॉ. अशोक आर्य

आज मर्यादा पुरूषोत्तम राम के चित्र व मूर्ति का पूजन बड़े धड़ल्ले से हो रहा है। किसी को भी उस राम के चरित्र पर चलने की इच्छा नहीं रहती, जिसने पिता के उस वाक्य पर राज्य सुख को ठोकर मार चौदह वर्ष के लिए वनवास का वरण किया, जो आदेश पिता ने कभी भी अपने मुख से उचारा ही नहीं। ऐसे पितृ भक्त बालक राम के पिता दशरथ के राज्य काल का जरा विहंगम दर्शन करें तथा उस समय की अवस्था को देखते हुए विचारों कि क्या राम को केवल भरत को राज्य देने के लिए ही वनों में भेजा गया था या इसके पीछे अन्य कारण भी थे? इस प्रकार का विचार करने पर जो तथ्य सामने आते हैं, वह इस प्रकार है:

राजा दशरथ के शासन काल में प्रतिदिन अनेक स्थानों पर बम फट रहे थे, अनेक लोग विशेष रूप से वैज्ञानिक लोग, जिन्हें सम्भवतया उन दिनों में ऋषि कहा जाता था, विदेशी भूमि लंका से प्रायोजित आतंकवाद से पीड़ित थे। जिस प्रकार आज पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद से भारत बेहाल हो रहा है, उसी प्रकार श्रीलंका उन दिनों सम्भवतया आंतकवाद फैलाने का कारण भी बन चुका था। आज के भारत के समान ही उस समय के भारत में भी इस श्री लंका प्रायोजित आतंकवाद को समाप्त करने के लिए अनेक योजनाएं बनीं होंगी, कुछ सफल होतीं, कुछ नहीं। इसी मध्य राजा दशरथ के चारों बेटों को आतंकवाद से मुकाबला करने की विशेष शिक्षा दी गई। भाईयों में राम सब से अधिक योग्य थे तथा सैनिक दृष्टि मे लक्ष्मण का स्थान दूसरा था। अतः इन्हें आतंक विरोधी कला में निष्णात करने के लिए गुरु विश्वामित्र अपने साथ ले गए, जहाँ उन्हें अनेक प्रकार के भयानक शस्त्रों की शिक्षा दी गई। यह शिक्षा पूर्ण होने पर, इसका प्रयोग तत्कालीन दो विदेशी आतंकियों पर किया गया तथा खर व दूषण नाम के इन दोनों को उनके साथियों सहित नाश करके अयोध्या के एक क्षेत्र को साफ कर दिया। नीति की दृष्टि से जनक की बेटियों से इन का विवाह करवा कर राज्य सत्ता को एक महान् सहयोगी जनक के रूप में साथ जोड़ा गया।

दशरथ यह जानता था कि यदि भारत की भूमि पर आतंक विरोधी लड़ाई लडी गई तो वर्तमान एटम से भी अधिक भयंकर बम, जो उस समय थे, के चलने से देश की हालत हीरोशिमा व नागासाकी से भी कहीं

शेष पृष्ठ 07 पर

आर्य समाज और ढोंगी बाबा

● वेद मार्तण्ड डॉ. महावीर मीमांसक

राम रहीम के काले कारनामों से यह निर्विवाद सिद्ध हो गया कि साधारण जनता जनार्दन भगवान् के प्रति कितनी अटूट श्रद्धा रखती है, कितनी आध्यात्मिक–परायण है, कितनी अन्धश्रद्धा में मतान्ध है तथा यह तथ्य भी सिद्ध हो गया कि उसकी अन्धश्रद्धा का कोई चालाक व्यक्ति अपने स्वार्थ और अपनी ऐषणाओं की पूर्ति के लिये कितना दुरुपयोग कर सकता है तथा ऐसी भोली भाली अन्धविश्वासी जनता को किस हद तक मूर्ख बनाया जा सकता है।

राम रहीम का यह कोई पहला काण्ड नहीं है, इससे भी पहले ऐसे काण्ड हो चुके हैं जिनको सब भली–भांति जानते हैं। साधु, सन्त और संन्यास के धर्म, कर्म को इन ढोंगी बाबाओं ने निर्दयता से कुचल कर रखा।

सन्त कहे जाने वाले रामपाल का काण्ड सर्वविदित है जिसके कारण रामपाल अभी भी हिसार (हरियाणा) की जेल में सलाखों के पीछे है। रामपाल हरियाणा सरकार में एक क्लर्क के स्तर की नौकरी करता था, कबीर पन्थ के ठिकानों पर उपदेश सुनता रहता था। दिमाग से बड़ा शातिर था। उस ने सत्संगों में देखा कि यहाँ तो लोग बड़े भोले और साधारण बुद्धि के आते हैं, इन को कोई भी बात कही जाये, सब के अन्त में ये यही बोलते है, ''सत्य वचन महाराज''। इन को बहका कर इन का गुरु बनना और अपना मठ स्थापित करके गद्दी पर विराजमान होना बड़ा ही आसान है। पैसों की तो ये अन्धे भक्त अपने गुरु पर बारिश करते हैं। इसी विचार से इसने कबीर साहित्य को पढ़ना शुरू किया, जिसे समझने में कोई कठिनाई नहीं होती, क्योंकि वह बड़ी साधारण और व्यवहारिक बोलचाल की भाषा के स्तर का है। इस ने नौकरी छोड़ दी छोड़ी नहीं अपितु इसे नौकरी से निकाला गया। इस ने छोटे मोटे ठिकानों पर कबीर पन्थ पर प्रवचन देने प्रारम्भ किये। अहिस्ता–अहिस्ता भक्तों की भीड़ का जमावड़ा बढ़ने लगा। अन्धे भक्तों की सहायता से इसने रोहतक जिले के डीघल गांव के पास करौंथा गांव (हरियाणा) में भूमि लेकर अपना आश्रम बनाया और आश्रम का नाम सतलोक (सत्यलोक) रखा। जन साधारण की धार्मिक भावना का दुरूपयोग करके उन्हें आकर्षित करने के लिये आश्रम का यह सत लोक नाम जादुई प्रभाव करने के लिये काफी था। गरीब और साधारण तब के लोग, किसान और मजदूर, विशेषरूप से अधिकतर महिलायें इसकी अन्धी भक्त बन गई। सन्त तो यह प्रसिद्ध हो ही गया, अपने प्रवचनों में यह अपने आप को कबीर साहब का भेजा हुआ दूत बतलाने लगा जो अपने भक्तों को सीधा सतलोक अर्थात् स्वर्गलोक भगवान के दरबार में पहुंचाने की गारन्टी देने लगा। सांसारिक दु:खों और पीड़ाओं से ग्रस्त जनसाधारण को इतने सस्ते में भगवान् के दर्शन से बढ़कर क्या चाहिये! इसने कबीर साहब के बाद अपने आपको कबीर साहब का अवतार स्थापित कर लिया और कबीर को साक्षात् भगवान् सिद्ध करने लगा। इसके लिये वह वेद/उपनिषद् के इस वचन को प्रमाण के रूप में उपस्थित प्रस्तुत करता था **'कविर्मनीषी परिभू: स्वम्भू:'** जिसकी व्यवस्था में वह इस मन्त्र के प्रथम शब्द कविर्मनीषी – कवि: मनीषी में आये हुये कवि: (कविर) शब्द को कबीर कहकर बोलता था और कहता था कि वेद में उस मनीषी स्वयंम्भू भगवान को कबीर कहा गया है, अत: कबीर साहब वेदों में वर्णित साक्षात् भगवान हैं और मैं (सन्त रामपाल) एकमात्र कबीर भगवान् का अवतार हूं। दूरदर्शन पर प्रतिदिन रात्रि के आठ बजे के समय में दिये जाने वाले सन्त रामपाल के प्रवचन इस के प्रमाण हैं। कि वह अपने विषय में क्या–क्या कहकर प्रवचन करता था और अपने भक्तों को क्या–क्या प्रलोभन के सब्ज बाग दिखाकर अपने जाल में फंसाता था। इस प्रकार रामपाल सन्त और सन्त से भगवान् बन गया, उसका करौंथा गांव का आश्रम सब प्रकार के भोग विलासा के साधनों से सम्पन्न बन गया, विपुल सम्पत्ति के साम्राज्य का सन्त रामपाल मालिक बन गया, उसका जीवन और जीवन शैली अत्यन्त रहस्यमय बन गई,साधारण भक्तों की भीड़ उसके दर्शनों के लिये लालायित रहने लगी। इसके लिये सन्त रामपाल क्या–क्या ढ़ोग और पाखण्ड करता था। अपने रहस्यमय संसार के जीवन का उपभोग और आनन्द लेने के लिये क्या–क्या अनाचार और कदाचार करता होगा, पाठक इसका अनुमान स्वयं लगा सकते हैं। क्योंकि उसके खिलाफ कोर्ट में मामला लाम्बित है, अत: अधिक लिखना उचित नहीं। सन्त रामपाल अभी भी जेल में है, उसे जमानत भी नही मिली है।

सन्त रामपाल को अपनी ढोंग और पाखण्ड की पोल खुलने का खतरा यदि किसी से था तो वह केवल आर्यसमाज से था। हरियाणा आर्यसमाज का गढ़ है। स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने कई गुरुकुल हरियाणा में ही खोले थे। स्वामी ओमानन्द जी (आचार्य भवगान देव जी के नेतृत्व में गुरुकुल) झज्जर (हरियाणा) विख्यात हो चुका था। इन अनेक गुरुकुलों के स्नातक हरियाणा में ही कार्यरत थे। रोहतक में हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख्य कार्यालय था जो आर्य समाज की गतिविधियों का केन्द्र था और सन्त रामपाल का करौंथ गाँव में सतलोक आश्रम रोहतक के पास ही था। सन्त रामपाल प्रतिदिन दूरदर्शन पर स्वामी दयानन्द को पानी पी–पी कर कोसता था। स्वामी दयानन्द से सत्यार्थप्रकाश और वेद भाष्य में अपनी मूर्खता का प्रदर्शित करते हुये अनाप–शनाप झूठी गलतियाँ निकाल कर भोले भाले संस्कृत अनभिज्ञ भक्त श्रोताओं को बरगलाता रहता था। ऋषि दयानन्द को जीभर कर गालियाँ देता और कोसता रहता था। आर्यसमाज ऐसे महामूर्ख अनपढ़ गंवार को कैसे बर्दाश्त करता आर्यसमाज ने इसे खुले शास्त्रार्थ की चुनौती दी, किन्तु यह सामने नहीं आया, आर्यसमाज ने इसके खिलाफ इसके आश्रम के पास ही मोर्चा खोला इसकी मूर्खतापूर्ण एक–एक बात का उत्तर दिया और जनता को सच्चाई से आगाह किया। परिणामस्वरूप जनता इसके विरोध में खड़ी हो गई, इसके विरोध में जबरदस्त आन्दोलन आर्यसमाज के नेतृत्व मे किया गया। परिणाम स्वरूप इसे करौंध के अपने सतलोक आश्रम को छोड़कर भागना पड़ा और हिसार जिले में वर्तमान आश्रम बनाया। वहाँ पर भी इसने अपनी मूर्खतापूर्ण ढ़ोगभरी अनाचार और भ्रष्टाचार पूर्ण गतिविधियाँ जारी रखीं। हरियाणा सरकार ने वहाँ इसके आश्रम पर छापा मारा और तीन दिन तक निरन्तर संघर्ष करने के बाद अनेक लोगों के इस की गोलियों का शिकार होने के बाद इसके आश्रम में घुसने में पुलिस सफल हुई। आज यह सन्त रामपाल हिसार जेल में 10आपराधिक धाराओं के तहत हिसार जेल में बन्द है और इसकी सभी जमानत की याचिकायें खारिज हो चुकी हैं। लेखक स्वयं इस के विरुद्ध आन्दोलनों में सक्रिय भागीदार रहा है।

दूसरा इससे भी घिनौने दुष्कृत्यों में लिप्त सन्त आसाराम का उदाहरण है। उस के ऊपर भक्तों के द्वारा अथाह धन सम्पत्ति, विशाल भूमि का स्वामित्त्व, हत्यायें और बलात्कार जैसे गम्भीर अपराधों की भरमार दर्ज है। वह भी सन्त रामपाल से भी अधिक ढ़ोंग भरे नाटकीय गतिविधियों से धर्म के नाम पर अपने भक्तों को रिझाता था। आज वह अनेक संगीन अपराधों के जुर्म में जोधपुर की जेल में बन्द है और उसकी भी सभी जमानत–याचिकायँ में खारिज हो चुकी हैं।

तीसरा उद्धारण अभी हाल का ढोंगी और ऐय्याश बाबा सच्चा सौदा के नाम पर अथाह साम्राज्य स्थापित करने वाले, अनाचार, दुराचार, भ्रष्टाचार और व्यमिचार सभी प्रकार के दुष्कृत्यों में आपाद कण्ठ डूबे हुए बाबा रामरहीम का है। धर्म के नाम पर सभी प्रकार के दुराचार पूर्ण तरीकों से अपने करोड़ों भक्तों की फ़ौज खड़ा करने वाले, राजनीतिक नेताओं तक अपने पैरों की धूल चटा कर अपना भक्त बनाने वाले और सरकार से टक्कर लेने की ताकत रखने, अपने साम्राज्य का ताना बाना का जाल पूरे देश में बनने वाले गुरमीत उर्फ राम रहीम का देशद्रोही काण्ड जग जाहिर है। राम रहीम अब 20 साल के कठोर कारा वास में जेल में सलाखों के पीछे दहाड़ मार मार कर रोता हुआ सजा काट रहा है। ऐसे और भी कई ढोंगी बाबाओं की दुकानें चल रही हैं, उनकी भी पोल खोलने की आवश्यकता है।

आर्य समाज को अब यह जानाने का स्वर्णिम अवसर है। समूचे देश में आर्य समाज के सिद्धान्तों के अनुकूल अवसर है। आर्य समाज धर्म के नाम पर होने वाले सभी प्रकार के पाखण्डों आडम्बरों और ढोंगी का घोर विरोधी रहा है। आर्य समाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द ने अपने कालजयी अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में अन्तिम चार समुल्लास धर्म के नाम पर होने वाले सभी प्रकार के पाखण्डों ढोंगों, अनाचार, दुराचार, अत्याचार, भ्रष्टाचार और व्यभिचार के कुकृत्यों की पोल बड़े विस्तार से और साफ़ साफ़ कठोर से कठोर शब्दों में खोली है। उन्होंने ईश्वर, धर्म और आध्यात्मिकता का वास्तविक स्वरूप मानव की जीवन शैली के सभी अगों की विस्तार पूर्वक व्याख्या करते हुए सत्यार्थ प्रकाश के प्रारम्भिक दस समुल्लासों में बतलाता है। आज देश धर्म के नाम होने वाले ऐसे ढ़ोंगों, पाखण्डों और अन्धविश्वासों से तंग आ गया है। झूठी और अन्धी आस्था को पोल जनता के समक्ष खुल चुकी है। अत: आर्य समाज अब अपने सच्चे धर्म के प्रचार को उग्र रूप से लेखों द्वारा, प्रवचनों द्वारा, भजनों द्वारा, मीडिया के साधनों द्वारा तेज करे। अब वह अवश्य सफल होगा क्योंकि देश अब सच्चाई को जानना चाहता है, धर्म के सच्चे स्वरूप को जानने के लिए देश अब बड़ी बेताबी से प्रतीक्षा कर रहा है। गाँव और देहात की बहुसंख्यक भोली भाली जनता को विशेष रूप से जागरूक करने के लिए भजनीक प्रचारकों को यह काम सौंपना चाहिए। शहरों में तो उपदेशक प्रचारक मिल ही जाते हैं। अपने प्रचार कार्य के लिए आर्य समाज को आधुनिक विद्या मीडिया दूरदर्शन का उपभोग करने के लिए विशेष ध्यान देना चाहिए जिससे वह अभी तक दूर है या पूर्णत: अपेक्षित है। आर्य समाज की पत्रिकाओं में तो इस विषय पर सम्पादकीय तथा लेखों की भरपूर भीड़ लग जानी चाहिए। आर्य समाज में भी कोई तर्क हीन आस्था पनपने न पाए इस के प्रति भी बड़ा सावधान और जागरूक रहने की आवश्यकता है। आर्य समाज इसके खिलाफ अब एक योजना बद्ध अभियान छेड़।

वैदिक शोध सदन
A–3/11 पश्चिम विहार
नई दिल्ली–110 063

भक्त की दृष्टि

● यश वर्मा

ओ३म् अम्भो अमो महः सह इति त्वोपास्महे वयम्।। यह अथर्ववेद का मन्त्र है जिसका भावार्थ है'' हे भगवान। आप सबमें व्यापक शान्तस्वरूप और प्राण के भी प्राण हैं। तथा ज्ञानस्वरूप और ज्ञान देने वाले हैं। सबके पूज्य, सबके बड़े और सबके सहन करने वाले हैं। इस प्रकार का आपको जान के हम लोग सदा उपासना करते हैं।''

एक भक्त प्रभु को ऐसा मानता व जानता है कि वह सर्वव्यापक है, मेरे अन्दर, बाहर, ऊपर, नीचे, आगे, पीछे, दाएँ, बाएँ सब ओर विद्यमान है। मैं उसमें डूबा हुआ हूँ जैसे जल में मछली होती है। उस प्रभु को इस दृश्य जगत में अनुभव करता है। अपने प्राणों में भी उसी को अनुभव करता है कि इनको चलाने वाला वह प्रभु ही तो है। वह ज्ञान का भंडार है तभी तो हमें वेदों का ज्ञान दिया है। संसार का एक एक पदार्थ, एक एक जीव कितनी पूर्णता से ज्ञानपूर्वक बनाया है व सबको गति भी दे रहा है। चाहे वह सूर्य हो व चाँद हो, सितारे हों या पृथ्वी हो, जड़ पदार्थ हों अथवा चेतन हों, सब कितने नियम से कार्य कर रहे हैं। प्रभु महान से महान, बलवान से बलवान, विद्वान से विद्वान, धनवान से धनवान है। सबके बड़े व पूजनीय है। अतः हम सब भी प्रभु में डूबकर उसकी उपासना करें।,

एक प्रभु का भक्त है जो सदा सब स्थान पर प्रभु के दर्शन करता है। वह दीवाना सा हो जाता है। वह जब संसार को देखता है तो हर पदार्थ में ब्रह्म ही दीखता है। हर वस्तु के कण कण में ब्रह्म का ठिकाना नज़र आता है। पेड़ों पर ढूँढता है तो पेड़ के हर पत्ते में उसकी कारीगरी देखकर कह उठता है कि फूलों की काया में भी मेरे प्रभु आप ही बैठे हो, सूर्य, चाँद, सितारों में देखता है तो वहाँ भी ओ३म् के प्रकाश को देखकर कह उठता है कि वाह! प्रभु वाह!, तू तो यहाँ पर भी विराजमान होकर इन सबको प्रकाश और गति दे रहा है। फिर छोटे–बड़े सब जीवों को देखता है तो पाता है कि इन सबमें प्राण चल रहे हैं। इन प्राणों को कौन चला रहा है। तब उसे पता चलता है कि सबके हृदय में वही छुप कर बैठा है तभी तो इन चर्म चक्षुओं से नज़र नहीं आता है। वह तो हृदय से, आत्म से अनुभव करने पर ही दर्शन देता है। बस भक्त वाली दृष्टि बनानी पड़ती है।

इस प्रकार देखते–देखते वह भक्त प्रभु के ध्यान में मस्त हो जाता है। उसे हर ध्वनि में ओ३म् की धुन सुनाई देती है। जहाँ भी यज्ञ हवन की सुगन्धि हो सत्संग चल रहा हो वहीं पहुँच जाता है जहाँ साधक प्रभु के ध्यान में बैठे हों और मिलकर प्रभु की भक्ति कर रहे हों, वहाँ वह भी प्रभु का गुणगान करने लगता है। उस पर प्रभु की भक्ति का ऐसा जादू चल जाता है कि वह अमन में, चमन में, नमन में सबमें उस प्यारे प्रभु का मनन चिन्तन करने लगता है। और उसी में मस्त हो जाता है।

उसी मस्ती में देखता है कि कण–कण में विद्यमान प्रभु की तो बहुत निराली शक्ति है। उसका न कोई रूप है न रंग है न आकार है न भार है, न ही कोई हाथ, पाँव, नाक, कान, आँख वाला शरीर है। न उसे भूख–प्यास लगती है, न राग है, न द्वेष है, न ही छल–कपट, चोरी करता है, न झूठ बोलता है, न ही जले–कटे और न ही रोगी होकर मरता है। वह तो नित्य है, चेतन है, निराकार है, सर्वव्यापक है और अन्तर्यामी है। उससे हम मन की बातें छिपाने का प्रयास करते हैं लेकिन वह तो हर समय हमें देख रहा है। तभी तो वह सबके साथ न्याय कर पाता है। अच्छे, बुरे फल देकर (सुख दुख रूप में) सबके साथ न्याय करता है। इतना शक्तिशाली व महान है वह प्रभु।

वह प्रभु एक दिन प्राणी को उपदेश देता है कि देख वह मृग पानी के लिए मरूभूमि में भागता फिरता है। सुन्दर चमकती हुई बालू को पानी समझ कर आगे और आगे भागता है। परन्तु पानी न मिलने पर प्यासा ही मर जाता है। तेरी भी वही अवस्था है। सदा भौतिक सुख की चाह में यही सोचता है कि धन में भोगों में, इच्छाओं की पूर्ति में ही सुख है। इसी होड़ में दौड़ता फिरता है, कमाता रहता है। फिर अन्त में सब कुछ यहीं पर छोड़–छाड़ के संसार से विदा हो जाता है। हे प्राणी, आनन्द तो तेरे भीतर में है जिसे तु भोगों में ढूँढ रहा है। तू मेरी शरण में आ, मेरा मित्र बन जा, तू अपने आप को, अपने हर कार्य को मेरे अर्पण कर दे, जब तेरा भार तुझ पर नहीं होगा तो तू सब चिन्ताओं से मुक्त हो जाएगा फिर तू आनन्द ही आनन्द पाएगा।

हे प्राणी, यदि तू ओ३म् नाम को बिसरा देगा तो जीवन में दुख ही पाएगा, विषय भोगों की खाई में गिरकर चोटें ही चोटें खाएगा। यदि तूने अपनी जीवन शैली नहीं बदली और वेद मार्ग पर अग्रसर नहीं हुआ तो अन्त में पछताएगा। यदि तू भोगों का दास बना रहा तो समझ ले कि सुख कोसों दूर है। तू रोता हुआ जग में पैदा हुआ था और रोता हुआ ही जग से चला जाएगा। तेरा हित इसी में है कि तू भली भाँति समझ ले कि भोगों में सुख नहीं है। सच्चा सुख और आनन्द तो ओ३म् के नाम में ही है। इसे पा ले और आनन्द मग्न हो जा।

ओ३म् की उपासना महान है क्योंकि एक ओ३म् ही सर्वशक्तिमान है और सबको शक्ति देने वाला है। वह हमारी वाणी का भी वाणी है। उसकी शक्ति से ही तो यह जिह्वा बोल पाती है। वह तो मन का मन है तभी तो प्राणी सोच समझ पाता है। वह चक्षु का भी चक्षु है, वह प्रकाशमान है। उसी की ज्योति से हम देख पाते हैं। श्रोत्र का भी श्रोत्र है। हमारे प्राणों का प्राण भी तो वही है। उसी की शक्ति से ही तो हमारी ज्ञानेन्द्रियाँ, कर्मेन्द्रियाँ, मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार, देह आदि सब कार्य करते हैं। हमारी आत्मा को ज्ञान–बल–क्रिया करने की शक्ति प्रभु ही तो दे रहे हैं। वो ही महान और सर्वशक्तिमान हैं।

जब तक हमारे तन में श्वास चल रही है। हम अपनी रसना का सदुपयोग करते हुए ओ३म्–ओ३म् ही बोलते रहें जब तक जिह्वा और मन कार्य कर रहें हैं तब तक प्रभु का सिमरन करते रहें। क्योंकि अन्त समय में यह रसना साथ दे न दे, यह हिले न हिले कुछ पता नहीं। प्रभु ने हमें सुन्दर–सुन्दर पदार्थ अन्न, दूध, फल, सब्जियाँ मेवे आदि दिए हैं। हम इनका अकेले भोग न करें बल्कि बाँटकर खाएँ, त्याग भाव से इनको भोगें। अच्छी वाणी से प्रेम बाँटते चलें। नित्य प्रति हमारे जीवन में नयापन हो। प्रभु प्रेम का अमृत हम सब मिलकर पिएँ, नित्य पिएँ, अन्त समय का क्या पता कुछ हो पाए या न हो पाए।

हमारी असली मंजिल तो ओ३म् ही है। हमारे जीवन का किनारा ओ३म् ही है। हमें अपने जीवन का हर पग ओ३म् की ओर बढ़ाना है तभी हम जीवन मुक्त हो कर मोक्ष की राह को पा सकते हैं। हमारा जीवन तो काँटों की नैय्या है जबकि ओ३म् नाम का गुणगान करते चलें। ओ३म् की राह तो बड़ी निराली है, अद्भुत और सुख देने वाली है। ओ३म् नाम में ही शांति और आनन्द है।

उस परमपिता के द्वार पर हम जाकर तो देखें, उसे ज़रा अपना बनाकर तो देखो फिर देखो कि कैसे अन्तःकरण की नगरी को वह बसा देंगे, सजा देंगे, सँवार देंगे। जो हमारे हृदय में अविद्या भरी पड़ी है उसे अद्भुत प्रकाश दिखा के प्रकाशमान बना देंगे। श्रद्धा और भक्ति से उसका ध्यान लगा के तो देखें, वह भी हमें कृपादृष्टि से निहारेंगे। उनकी शरण में आकर तो देखें वह अपनी करूणामयी दृष्टि से ऐश्वर्यशाली बना देंगे।

ओ३म् ही हमारे जीवन का सच्चा सहारा भी है, और किनारा भी है। हमें उसी की ओर पग–पग बढ़ना है और उसे पा लेना है।

ओ३म् आनन्दम् गाता जा, गाता जा गाता जा,
ओ३म् किनारा पाता जा, पाता जा पाता जा।।

मन्त्री आर्य समाज
माडल टाऊन, यमुना नगर
मो. 9416446305

☞ *पृष्ठ 05 का शेष*

वर्तमान उग्रवाद में ...

अधिक गन्दी हो जावेगी। सैंकड़ों वर्षों तक इस भूमि पर कुछ पैदा नहीं होगा। देश की हालत पूरी तरह से बिगड़ जावेगी। इस लिए दशरथ का प्रयास था कि आंतक विरोधी लड़ाई भारत की भूमि पर न लड़ी जावे। ठीक ऐसी ही सोच आज भी भारत की है। परिणामस्वरूप सोची समझी योजनानुसार जंगली आदिवासी वेश में ठीक इसी प्रकार भारतीय सेना भेजी गई होगी, जिस प्रकार बांग्लादेश में श्रीमती इन्दिरा गांधी ने भेजी थी। उसी के ही पीछे यह दिखाने के लिए कि अयोध्या में फूट पड गई हैं, राम लक्ष्मण व सीता जी को उन्हीं क्षेत्रों में निर्वासित कर दिया गया। यहाँ सब से पहले रावण पक्षीय बाली का वध किया गया। अन्यथा जब मारीच न मरते हुए आवाज दी कि हा! मर रहा हूं लक्ष्मण बचाओ, यह आवाज सुनते ही श्री राम भी तो चिला कर कह सकते थे, लक्ष्मण मत आना, इसमें धोखा है। सीता का हरण होने के साथ ही भारत से यह लड़ाई दूर होकर लंका की धरती पर चली गई। यहाँ पहले हनुमान ने जाकर आग लगाई अर्थात फूट डाल दी। रही सही कसर अंगद ने पूरी कर लंका को भयभीत कर दिया। जिस रावण के सामने कोई बोलता नहीं था, उसी को सभी उपदेश देने लगे, तूने अच्छा नहीं किया। जा सीता को वापिस दे आ। सभी सहयोगियों के इन शब्दों ने निश्चित रूप से रावण का मनोबल कम किया होगा, जो उस की पराजय का कारण बना। भारत की पूर्व प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी को भी मुजीबुर्रहमन रूपी विभीषण मिल गया था। आज यदि भारत पुनः पाकिस्तान का एक विभिषण ढूँढ कर अपने साथ मिला ले तो निश्चित ही मुशर्रफ रूपी रावण का एक बार फिर नाश होगा। बस आवश्यकता है रामायण की शिक्षानुसार उग्रवाद पर आक्रमण बोलने की। इस रामायण कालीन घटनाक्रम को देखते हुए यह कथा मेरा अनुमान मात्र है तथा विश्वास भी है कि यही एक मात्र उपाय है वर्तमान उग्रवाद को खत्म करने का! अतः हमें इस पर विचार करना ही होगा।

पाकेट 1, प्लॉट 61, रामप्रस्थग्रीन, वैशाली
201010 गजियाबाद,
चलभाष 09717528068

Socialist Pattern of Society in Ancient India

B.M. Uppal

Socialism is not a western creed transplanted in India by the zealous socialists or communists. It is as old as Vedic culture. Our ancient literature, culture, traditions, organisation of society and concept of property and state are all imbued with the spirit of socialism or social justice.

Concept of Property

Ancient Indian philosophers and Lawgivers fully recognised the natural instinct in man for acquiring, possessing and owning property. In the *Shukra-Niti* it is made clear that "one should pursue learning by moments and wealth by grains. The moments and grains are not to be left out by man who wants learning and wealth. Daily acquisition of wealth is good for life, children and friends and also for charity. So long there is wealth one is respected by all." Individuals were required to earn wealth by righteous means; they were not allowed to grab what belonged to others. There was no such thing as absolute private property. According to the Social theory propounded by Vijnaneshwara "all property was a trust held for the sake of public welfare and the trustee was always to- remember that his right was valid as long as he was faithful to the conditions of trust and not a minute longer." The *Bhagwat Puran* (VII-14-8) prescribes: "Only that much is the ownership of man, by which he can just maintain himself. One who tries to grab more, is a thief and deserves punishment."

The state had right of appropriating property for the benefit of society. *Brahaspati* is of the view that "a rich man who does not spend his wealth on building assembly halls, watersheds, temples, tanks, gardens, for the maintenance of orphans and the poor—his wealth should be confiscated and he should be banished from the country." Manu has gone a step further in laying down that "two persons should be drowned in water after being tied with heavy stones—a Brahman who does not preach and a rich man who does not give." The *Bhagwat Gita* (III,12), preaches : "He who enjoys the gifts bestowed by them (gods) without giving in return, is undoubtedly a thief." With constant hammering of these ideas acquisitions of property lost all its capitalistic implications and was utilised for social welfare alone.

Social Organisation

Ancient Indians did not believe in absolute equality which was discarded even in Russia after a few years of experimentations after the Bolshevik Revolution. They believed in equality of opportunity for all irrespective of caste or creed. In the *Rig Veda* (X, 117, 9,) it is written: "The hands, though both alike, differ in functions. The yield of sister milch-kine is unequal. Twins even differ in their strength and vigour and even two of one family differ in their bounty." Keeping this in view they divided the whole society into four sectors, *Brahaman*, *Kshatriya*, *Vaisya*, and *Sudra*, on the basis of qualities possessed by each individual. They had to perform different functions according to their temperament and predilections. Worth, not birth, determined one's caste.

The Brahamans were not bound together by ties of birth. There is absolutely nothing to prove that, as in later days, none but the son of a Brahaman could belong to this class. *Taittiriya—Samhita* declares, "He who has learning is the Brahaman rishi." The Kshatriyas, along with Brahamans, enjoyed special rights and privileges apart from all classes. Many Buddhist texts reveal that Brahamans and Kshatriyas tilled the soil and took to trade and menial work if they did not possess requisite qualifications. Their rank was not a closed rank.

Men who possessed certain type of supernatural ability to acquire wealth were deemed as Vaisyas. They did not form a homogeneous group. They were too large in number and too varied in nature. They were, in fact, a conglomeration of different groups of people following different professions. The division of society was based on socialistic lines. They had to earn money to provide for themselves, the Brahamans, the Kshatriyas and the Sudras. They were morally and legally bound to pay one-twelfth to one-sixth of their produce of agriculture towards state revenues; about one-tenth of their total income to Brahamans by way of charities, some part to the Sudras and pay heavy taxes on trade and commerce. After paying all these dues very little was left with them. The policy of the state was to encourage equitable distribution of wealth and discourage capitalistic economy and hoarding of wealth in fewer hands.

Attainment of *Moksha* was the ultimate aim of life of all classes. It could be attained by *Yajna* or sacrifice. In the Bhagwat Gita emphasis is laid on sacrificial life dedicated to the service of mankind. In the Rig Veda gods are asked to transfer wealth of the impious to the sacrifice. The attitude of the people towards sacrifice is manifested in the *Yajur Veda* : "May my rice plants and my barley, my beans and my sesamum, my kidney beans and my vetches, my millet and other small corns, my wheat and my lentils prosper by sacrifice." (XVIII, 12) People had no morbid love of money. It was needed for performing Yajna and social welfare. A person who tried to hoard wealth was not respected by others, "In vain does the fool hoard wealth. This wealth shall verily prove his ruin. He entertains no comrades and no friends. All sin becomes he who eats with no partaker." (Rig Veda X, 117, 6.) This philosophy of life was supplemented by the teachings of Bhagwat Gita (III, 13): "The virtuous who partake of what is left after sacrifice, are absolved of all sins. Those sinful ones, who cook for the sake of nourishing their body alone, eat only sin." Their profoundly spiritual outlook on life combined with system of taxation made them true socialists whose only aim of life was to attain salvation through social welfare.

Agrarian Organisation

People lived mainly in villages which were managed by the village Councils or *Panchayats*. The Headman of the village was selected by the people and not by the king. There were peasant-proprietors whose main source of livelihood was agriculture. The state encouraged socialistic tendencies by framing rules and regulations which effected the sale and the ownership of land. The ownership of cultivable land was vested in private individuals or families but they were not allowed to sell it without prior permission of the neighbours and Village Council. The rules were so framed that they tended to bring about parity of wealth among the peasants. The waste-land belonged to the state in theory but it was generally disposed of according to the wishes of the village or town councils. Those who possessed more land than they could easily cultivate would lease it to the tenants who got 33 % to 50 % of the gross produce for their labour. A close study of the records, inscriptions or *Smritis* reveal that there is no mention of big *Zamindars* anywhere. There was no sharp cleavage between the rich and poor peasants.

Industrial Organisation

Indian goods were known all over the world for their exquisite beauty and elegance. They were manufactured by artisans and craftsmen who were scattered all over the country. The economy of the country was based on small scale and cottage industries. Some passages in the *Brihad-Aranyak-opanishad* (600 B.C.) refer to a fairly developed form of corporate activity in economic life. Both Buddhist and Brahamanical literature and inscriptions reveal that men following similar means of livelihood usually formed themselves into economic corporations called *Srenis* or *Pugas* which correspond to the guilds in Mediaeval Europe. There were guilds not only of merchants and bankers but also of manual workers like oilmen, weavers, masons and bamboo-workers. In the Muga-*pakkha Jataka* we find a -reference to the eighteen guilds which existed at that time. Kautilya refers to a class of Kshatriya-guilds in Kamboja and Surashtra countries which lived upon both war and trade. At Barah 274 sealings were found of the joint guild of bankers, traders and transport merchants having its membership spread over a large number of towns and cities in northern India.

Kautilya lays down specific rules regarding guilds of labourers and day-workers. Any person who persistently neglected his share of work was thrown out of the guild. Any member who was guilty of a glaring offence was treated as a condemned criminal. The total earnings were to be equally divided among all the members of the guild unless its usage dictated otherwise. In *Yajnavalky-Samhita* it is laid down that everything acquired by a man while engaged in business of the guild, including the gifts from kings and other persons, must be paid to the guild itself; anybody failing to do so of his own accord was liable to pay fine to the tune of eleven times its value.

There was a house or an assembly where the members of the guild assembled to transact public business from time to time. There was liberty of speech and every member had full right to express his views without fear or favour. The president of the guild and executive officers who conducted the business of the guild were ultimately responsible to this assembly. It appears from Mitramisra that the inclusion of new members of the guild or the exclusion of old members from its fold depended upon the assent of the guild assembly. The guilds wielded considerable executive and judicial authority. They were entitled to arbitrate on certain occasions even between the members and their wives. It shows that there was considerable decentralisation of powers and democratic set up in industry in ancient India. What Guild Socialists like AJ. Penty; S.G. Hobson and G.D.H. Cole want in twentieth century was already practised in ancient India hundreds of years ago.

Totalitarian State

A close examination of the *Mahabharata* and *Arthasastra* shows that the ancient, state was a totalitarian state in the sense that it embraced the whole human life, both here and

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

अंधभक्ति का दुष्परिणाम : विवश प्रशासन व पीड़ितजन

● विनोद कुमार

यह अत्यंत दुखद है कि गुरु–शिष्य परंपरा हमारी संस्कृति का अटूट भाग है। प्रायः सामान्य भोले–भाले व अशिक्षित या कम शिक्षित ही इस परंपरा में अधिक सक्रिय होते रहे हैं। सामाजिक जीवन में पुरुषों को जीवनयापन के लिए धनोपार्जन की अधिक व्यस्तता के कारण अधिकांश महिलाएँ ही गुरु बना कर उनसे भजन–कीर्तन व सत्संग आदि से जुड़ी रहती हैं। इस प्रकार सामान्य लोग अपने को धर्म कार्य से जोड़ कर संतुष्टि पाते हैं। अधिकांशतः महिलाएँ एक–दूसरे के संपर्क में आकर किसी भी प्रचलित या प्रसिद्ध ''गुरु'' की शिष्या सरलता से बन जाती हैं। इसके अतिरिक्त परिवार सहित भी इस परंपरा को अपनाया जाता रहा है। 'गुरु' बनाते समय ऐसे सामान्य लोगों में तथाकथित गुरु के चरित्र, आचरण, योग्यता, आध्यात्मिक स्तर व धर्मग्रंथों के ज्ञान आदि के प्रति कोई प्रश्न उत्पन्न ही नहीं होता? फिर भी इन तथाकथित धर्मगुरुओं के प्रति अत्यधिक आकर्षण बढ़ता जा रहा है और भोले भाले लोग बिना सोचे समझे इस अंधश्रद्धा भक्ति में जुड़कर अपने को धन्य समझते हैं। परंतु क्या इस प्रकार भेड़–चाल से शिष्य बनना सार्थक हो सकेगा? यहाँ एक बात अवश्य स्पष्ट है कि इस पद्धति से कुछ गुरुओं के पास अकूत सम्पत्ति एकत्रित होने से भी अनेक सम्पन्न व अभावग्रस्त लोग इनके अंधभक्त बन जाते हैं। जैसे–जैसे यह अंधभक्ति बढ़ती जाती है वैसे–वैसे ऐसे गुरुओं में अंहकार के साथ–साथ मानसिक दुर्बलता के कारण सामाजिक बुराइयां भी आ जाती हैं।

ऐसे अनेक धर्मगुरु पहले भी सामाजिक भावनाओं का दोहन करते रहे हैं और अब बाबा रामरहीम भी ऐसे ही गुरुओं की श्रेणी में आ गए हैं। उनके दुश्चरित व विलासतापूर्ण जीवन को अपराध की श्रेणी में लाकर रामरहीम के कुकर्मो से एक पीड़ित साध्वी ने अपने 16–17 वर्षों की घुटन से मुक्ति पाकर उन लाखों–करोड़ों लोगों पर भी उपकार किया है जोकि नासमझी में बाबा के अंधभक्त बने हुए है। जिस प्रकार 2002 में तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल जी को अपनी लगभग 1999 से 2002 तक के शारीरिक उत्पीडन आदि की व्यथा लिख कर गुमनाम पत्र द्वारा पीड़िता ने न्याय की आशा की थी वह अब सार्थक हो रही है। इसके लिए सीबीआई के तत्कालीन अधिकारी श्री एम.नारायण भी बहुत ही बधाई के पात्र हैं। परंतु यह बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण हुआ कि सीबीआई कोर्ट के निर्णय आने के बाद अंधभक्तों ने हिंसात्मक उपद्रव करके वातावरण को भयावह बनाने में कोई कसर नही छोड़ी और शासन–प्रशासन बेबस हो गया।

ऐसे में यह अत्यंत विचारणीय है कि जब राजनैतिक इच्छा शक्ति के अभाव में पुलिस सहित अन्य सुरक्षाकर्मी भी असहाय हो जाते हैं तो भीड़ के उपद्रवों को रोक पाना भी कठिन हो जाता है। यह बड़ी कठिन संवैधानिक व्यवस्था है कि सुरक्षाबलों को जब तक सत्ता का सुख भोग रहे राजनेताओं का आदेश नहीं मिलेगा तब तक वे आगजनी व तोड़फोड़ और अन्य हिंसक कार्यवाही करने वाली भीड़ पर कोई भी कार्यवाही न करने के लिये बाध्य हैं। क्या भविष्य में जब कभी आधुनिक हथियारों से लैस जिहादियों की भीड़ किसी भी स्थान पर कभी भी कोई आतंकी हमला करेगी तो सामान्य नागरिक अपने जान–माल की सुरक्षा कैसे कर पाएगा?

अतः ऐसी स्थिति में जैसा कि पंचकूला आदि नगरों में बाबा गुरमीत सिंह (रामरहीम) को साध्वी के यौन शोषण में न्यायालाय द्वारा दोषी घोषित किए जाने के बाद बाबा के भक्तों की भीड़ ने जिस प्रकार एक जुट होकर हिंसा का नंगा नाच करके अराजकता फैलाई है और प्रशासन आम नागरिकों के जान–माल की सुरक्षा में असमर्थ रहा तो असहाय सामान्य नागरिक क्या करें?

इसे शासन–प्रशासन की भूल या गलती कहना वास्तविकता को छिपाना होगा। जब यह सुनिश्चित था कि बाबा गुरमीत के समर्थक (अंध–भक्त) हज़ारों–लाखों की संख्या में उसके मुख्य कार्यालय सिरसा के आश्रम में एकत्रित हो गए और यह संभावना भी थी कि विपरीत परिस्थितियों में ये अंधभक्त सामान्य क्षेत्रों, मार्गों व बाज़ार आदि में हिंसा भड़का कर जान–माल की भारी हानि अवश्य पहुँचाएगे। इसीलिए सरकार ने धारा 144 लगाई व जगह जगह नाकेबंदी भी की थी। परंतु क्या यह सब दिखावा रहा। किसी भी अधिकारी द्वारा सीआरपीसी की धारा 144 के उल्लंघन पर कोई प्रतिक्रिया नहीं देखी गई। क्या उन्हें इस धारा के नियमों का ज्ञान नहीं जिसमें स्पष्ट है कि 5 व्यक्ति से अधिक एक साथ कहीं भी कोई एकत्रित नहीं हो सकता और न ही कोई सभा या जुलूस आदि निकाला जा सकता? लगभग 800 गाड़ियों का एक भारी भरकम जत्था जब जुलुस के रूप में आरोपी के साथ चले तो क्या सारा प्रशासन कबूतर के समान आँख बंद कर ले और आने वाले संकट को भगवान भरोसे छोड़ दे।

क्या सत्ताधारी राजनेताओं को बाबा रामरहीम जैसे आधुनिक व भोगविलासी गुरु के चरित्र और चाल पर कोई संदेह ही नहीं था? यह विचित्र है कि 3–4 दिन से ही सुरक्षा के प्रबंधों की भरपूर तैयारी का निरंतर इलेक्ट्रॉनिक मीडिया पर प्रचार होता रहा परंतु अवसर आने पर बिना गोली की बंदूक बन कर रह गया। जिस कारण ऐसी संकटकालीन मानवीय आपदा में सामान्य नागरिकों के जान–माल की सुरक्षा भी असंभव हो गई। परिणामतः जैसी संभावना थी पंचकूला सहित देश के 5–6 राज्यों में जहाँ जहाँ बाबा के अंधभक्तों के ठिकाने वहाँ वहाँ हिंसा का नंगा नाच होने से अभी तक के समाचारों के अनुसार अरबों की संपत्ति स्वाहा हुई और 30–40 लोगों की जीवन लीला भी समाप्त हुई है। जबकि 150 के लगभग निर्दोष नागरिक घायल भी हैं।

यह दुःखद है कि सत्ता भोगी अपने उत्तरदायित्व का संविधान के अनुसार पालन क्यों नही करते? विशेषतौर पर जब हरियाणा में बार–बार कानूनी व्यवस्था को ठेंगा दिखाया जा रहा हो तब भी त्रुटि होती रहें तो यह क्षमा योग्य कैसे हो सकती है? पूर्व में हुए जाट आंदोलन के समय भी सरकार भयावह हिंसक आंदोलन के आगे विवश हो गई थी। उससे पहले एक और ढोंगी रामपाल का भी प्रसंग चुनौती भरा था।

निसंदेह आज आम नागरिक अपनी सुरक्षा के प्रति सर्वथा सरकार के भरोसे निश्चित है। परंतु ऐसी परिस्थितियों में जब शासन व प्रशासन अपने अपने स्वार्थों के वशीभूत अपना दायित्व न निभाए तो आम नागरिक क्या करें? क्या भविष्य में हिंसात्मक व आतंकवादी गतिविधियों से सुरक्षित होने के लिए सामान्य नागरिकों को कोई प्रशिक्षण नहीं लेना चाहिये? अतः आत्मरक्षा में सक्षम होने के लिए अनिवार्य रूप से शस्त्र चलाने का प्रशिक्षण लेना सामान्य नागरिकों की प्राथमिकता होनी चाहिए। साथ ही संगठित होकर मरो या मारो की स्थिति में हथियार उठाने की क्षमता होनी चाहिए। हमको सोचना होगा कि जब दुर्जन एकजुट होकर हमको क्षति पहुँचा सकते हैं तो हम क्यों नहीं अपनी आत्मरक्षा के लिए संगठित होकर उनके विरुद्ध कार्य करें? ऐसा करने के लिए सभी देशवासियों को हमारे देश का संविधान भी अधिकृत करता है।

गाजियाबाद
Guptavinod038@gmail.com

शेष पृष्ठ 08 का ☞

Socialist Pattern of ....

hereafter. It held the ring for the interplay of social farces, intellectual activities, spiritual traditions and economic enterprise. The activities of the state in Mauryan period included security of life and property, administration of justice, economic control, nationalisation of trade and industry, social customs and strict observance of, rules prescribed by religion. The state encouraged arts and learning by extending patronage to scholars, artists, musicians and physicians. The state maintained hospitals, rest houses and charity halls to help the helpless, orphans, pregnant women and new-born babies. The state had to provide, manage and regulate highways and state-roads, shop-paths and cremation paths. It was the duty of the state to relieve distress caused by floods, pestilence, locusts, famines and earthquakes. Kautilya has even prescribed conditions under which divorce, separation, second or subsequent marriages could take place. He has even given detailed provisions for safe-guarding the honour and chastity of women, the safety of immature girls, relations of lovers and professions of prostitutes, conditions to promote true religion and the age and circumstances under which a man could renounce the world.

The state exercised considerable control on trade and industry. The state had a monopoly of industries which depended upon costly, risky and pioneering enterprise. The mines of gold, silver, diamonds, precious stones, lead copper, tin, and iron ore were nationalised. It had a monopoly in the manufacture of salt for which it granted licences to private lessees. The armament industry, coinage, building of boats and ships were government monopolies. The state spinning-house turned out cotton, silk, wool and jute products. The state controlled weights and measures, punished smuggling and adulteration of goods. Professions and occupations were also kept under strict supervision by the state. It issued trade licences to traders: physicians had to report all cases of grave illness to the government and penalty was imposed upon them if death occurred in unreported case. All this was done for the welfare of the people. We know very little about the difficulties faced by the people when government officials enforced these rules and regulations and how far they were actually enforced in various parts of the country. But the very fact that they are mentioned in the literature of that period shows that the government was alive to the dangers of uncontrolled economy. ❐

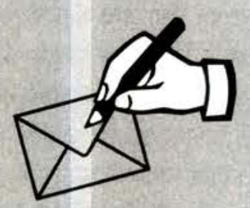

पत्र/कविता

राम को राम रहने दो......

राम को राम रहने दो, राम ही काम आयेगा।
जो परमेश्वर बना दोगे, न शुभ परिणाम आयेगा।।
अनुव्रती पुत्र था वह तो, रघु के वंशज दशरथ का।
संयमीशील व्रतधारी, पथिक था वेद के पथ का।।
सभी परिवार के लिए, राम आँखों का तारा था।
भाईयों के लिए तो वह, सदा प्राणों से प्यारा था।।
श्रेष्ठ पुरुषों में सर्वोतम राम का नाम आयेगा–जो परमेश्वर बना.........

वेद वेदांग का ज्ञाता, प्रबल विद्यानुरागी था।
राज सिंहासन निर्मोही, वचन हित सर्वत्यागी था।।
भरत की विनती को सुनकर, राम यदि वापस आ जाता।
न रामायण लिखी जाती, न मैं ये गीत लिख पाता।।
राम के अनुपम गुण गौरव, कोई कहाँ तक सुनायेगा–जो परमेश्वर बना.......

गया ऋषियों के यज्ञों की, सुरक्षा के लिए वन में।
देख असुरों की हिंसा को, लिया संकल्प ये मन में।।
उठाया आप क्षत्रिय ने, कोई दुखिया न रोयेगा।
मही निश्चर रहित होगी, दुष्ट ना सुख से सोयेगा।।
ये सत्संकल्प पूरा कर, राम विश्राम पायेगा–जो पस्मेश्वर बना.........

लगा जब तीर लक्ष्मण के, हिमालय का हृदय डोला।
चेतना लौटी तो लक्ष्मण, पूछने वालों से बोला।।
मेरी तो देह घायल है, देह को कैसा दुःख होगा?
बिलखते–रोते रात कटी, मेरा दुःख राम ने भोगा।।
वेदना राम से पूछो, घाव लक्ष्मण दिखायेगा–जो परमेश्वर बना ....

युद्ध में रावण–मरण हुआ, प्रश्न था दाहकर्म करना।
विभीषण कर तो सकता था, मगर सच था उसका डरना।।
राम बोले जीवित से वैर, देह निष्प्राण वैर कैसा।
ये तेरे लिए जैसा है, मेरे लिए भी अब वैसा।।
देह का दाह कर्म कर दो, कौन यह धर्म निभाएगा–जो परमेश्वर बना.......

राम निवास 'गुण ग्राहक'
गाँव–सूरौता
जिला भरतपुर (राज.)
सम्पर्क – 7597894991

रोहिंग्याः भारत की बेहतर कूटनीति

पिछले सप्ताह जब बर्मा में प्रधानमंत्री मोदी ने वहाँ के रोंहिग्या मुसलमानों की दुर्गति पर तटस्थता जाहिर की थी तो मैंने लिखा था, 'बर्मा में मोदी का मौन?' लेकिन यह भी लिखा था कि मोदी को कूटनीतिक चतुराई दिखानी चाहिए थी। उन्हें बर्मी नेताओं और बांग्लादेश के बीच ऐसा संवाद कायम करवा देना था कि रोहिंग्या लोगों को कुछ राहत मिल जाती। मुझे खुशी है कि यह काम अब हमारे विदेश सचिव डॉ. जयशंकर ने कर दिखाया है। नई दिल्ली स्थित बांग्ला–राजदूत की जयशंकर से भेंट के बाद अब भारत सरकार ने अपना रुख बदला है। मोदी की बर्मा–यात्रा के दौरान 'उग्रवादियों की हिंसा' की तो निंदा की गई थी लेकिन दो–ढाई लाख रोहिंग्या मुसलमानों के बर्मा से पलायन पर भारत मौन था लेकिन अब भारत सरकार ने बांग्लादेश को आश्वस्त किया है कि वह बर्मा की सरकार से बात कर रही है कि रोहिंग्या लोगों के साथ नरमी बरती जाए। असली समस्या यह है कि बर्मा या म्यांमार में रहनेवाले लगभग 10 लाख रोहिंग्याओं में से सिर्फ 4 हजार को वहाँ की नागरिकता मिली है। बर्मा के जिस दक्षिण–पूर्व के राखीन प्रांत में ये रोहिंग्या ज्यादातर रहते हैं, वहाँ गरीबी, अशिक्षा और अविकास का बोलबाला है। बर्मा की राजनीति या व्यापार में रोंहिग्याओं की कोई गिनती नहीं है। इधर उन्हें न्याय दिलाने के लिए कुछ हिंसक उग्रवादियों ने एक गिरोह खड़ा कर लिया है, जिसका नाम है–अराकान रोहिंग्या साल्वेशन आर्मी। इन हिंसक तत्वों को कुछ अरब राष्ट्र चुपचाप काफी मदद भी भेज रहे हैं। इन तत्वों ने पिछले दिनों बर्मी फौज और पुलिस पर हमला बोल दिया। गुस्साई हुई फौज और बर्मा के बौद्धों ने इतना कड़ा जवाबी हमला बोला कि सारे रोहिंग्या भाग–भागकर बांग्लादेश में शरण ले रहे हैं। भारत में पहले से 40 हजार रोहिंग्या गैर–कानूनी ढंग से रह रहे हैं। इन रोहिंग्याओं के प्रति संयुक्तराष्ट्र संघ, अमेरिका और यूरोपीय देशों की काफी सहानुभूति है। भारत इनके पक्ष में खुलकर इसलिए नहीं बोल रहा है कि वह बर्मी फौज को नाराज नहीं करना चाहता। लेकिन वह राखीन प्रांत में निर्माण–कार्यों के लिए खुलकर मदद कर रहा है। उससे रोहिंग्याओं को रोजगार तो मिलेगा ही, भारत द्वारा प्रस्तावित कलादान–थलमार्ग योजना भी क्रियान्वित हो सकेगी। उग्रवादियों ने एक माह के युद्ध–विराम की घोषणा की है और बांग्लादेश ने भी भारत की कूटनीतिक सक्रियता पर संतोष व्यक्त किया है। भारत की इस सुधरी हुई नीति का दक्षिण एशिया के सभी देशों पर अच्छा असर पड़ेगा।

डॉ. वेदप्रताप वैदिक
ई–मेल : dr.vaidik@gmail.com

****

हिन्दी दिवस (14 सितम्बर)

प्रायः कहा जाता है कि हिन्दी ही एक ऐसी भाषा है जिसमें आधे अक्षर भी होते हैं। इसमें जैसा कहा जाता है वैसा ही लिखा जाता है किन्तु मेरे अनुसार दो शब्द ऐसे भी हैं जिनमें सुधार की आवश्यकता है जैसेः–

लिखा जाता है

(1) स्टेशन (2) स्टैण्ड् (3) स्थिर (4) स्प्रिट (5) स्ट्रैग्थ (6) स्थित (7) स्थल (8) स्कूटर (9) स्तर (10) स्तन (11) स्थान आदि।

इन शब्दों में इ का प्रयोग क्यों नहीं किया जाता है जबकि बोलते समय बोला जाता है। यदि इ का प्रयोग शुरू हो जाए तो कमी दूर हो जाएगी। शुरु–शुरु में विचित्र लग सकता है बाद में नहीं लगेगा।

आधे न् और आधे म् के लिए बिन्दी का प्रयोग किया जाता है क्यों? केवल आधे न् के लिए ही बिन्दी का प्रयोग उचित और सही है।

लिखा जाना चाहिए

(1) इस्टेशन (2) इस्टैण्ड् (3) इस्थिर (4) इस्प्रिट (5) इस्ट्रैग्थ (6) इस्थित (7) इस्थल (8) इस्कूटर (9) इस्तर (10) इस्तन (11) इस्थान आदि।

अन्य भाषाओं वाले जब हिन्दी सीखते है तो उन्हें भी सीखने में आसानी होगी।

अभी भी कई उर्दू भाषी मुस्लिम जब उपरोक्त शब्दों में इ का प्रयोग करते हुए लिखते हैं तो कुछ विचित्र नहीं लगता है।

मुम्बई–सम्बोधन–सम्भाली– सम्भावली -- चैम्पियन जैसे शब्दों के लिए आधे इ का ही प्रयोग उचित लगता है। यहां बिन्दी का प्रयोग अनुचित लगता है।

हिन्दी के विद्वानों से अनुरोध है कि वे अपनी राय अवश्य दें।

इन्द्र देव, पूर्व प्रधान,
नगर आर्य समाज, बुलन्दशहर
मो. 08958778443

****

डी.ए.वी. पटना प्रक्षेत्र द्वारा वेद प्रचार सप्ताह एवं श्री कृष्ण जयन्ती समारोह

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मन्दिर मार्ग नई दिल्ली की प्रेरणा से डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल पटना प्रक्षेत्र में वेद प्रचार सप्ताह धूमधाम से मनाया गया। सहायक क्षेत्रीय निदेशक श्री इन्द्रजीत राय जी ने प्रक्षेत्र के सभी प्राचार्यों को वेद प्रचार सप्ताह मनाने के लिए प्रेरित किया।

इस अवसर पर प्रक्षेत्र के सभी विद्यालयों में सामूहिक यज्ञ, प्रवचन एवं विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ। प्राचार्य महोदय एवं संस्कृत के विद्वान् शिक्षकों को चतुर्मास के महत्व एवं वेद की उपादेयता पर विचार व्यक्त किए। छात्र–छात्राओं ने यज्ञ और प्रवचन का भरपूर लाभ उठाया।

वेद प्रचार के पूर्णाहुति के रूप में श्री कृष्ण जयन्ती समारोह आर्य समाज मन्दिर न्यू बेली रोड दानापुर के प्रांगण में भव्य रूप से मनाया गया, जिसमें प्रातः कालीन यज्ञ सम्पन्न हुआ जिसमें मुख्य यजमान के रूप श्री इन्द्रजीत राय जी यज्ञवेदी पर उपस्थित थे। उनके साथ प्रक्षेत्र के सभी प्राचार्यगण यज्ञवेदी पर सुशोभित हो रहे थे। श्री अरविन्द शास्त्री, श्री मनोज शास्त्री, श्री दामोदर पाण्डेय, श्री धर्मदेव मिश्र, श्री ओम प्रकाश आर्य जी पुरोहित के रूप में विद्यमान थे।

समारोह के मुख्य अतिथि श्री इन्द्रजीत राय जी ने अपने उद्‌बोधन में श्री कृष्ण के जीवन से शिक्षा लेकर विपरीत परिस्थियों में भी अविचल होकर अन्याय एवं अत्याचार के विरुद्ध हिम्मत, साहस तथा धैर्यपूर्वक निडर होकर सर्वदा प्रतिकार करने को कहा।

इस अवसर पर श्री कृष्ण के आदर्श चरित्र पर आधारित विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया था जिसमें डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल पटना प्रक्षेत्र के 14 डी.ए.वी. विद्यालयों के विद्यार्थियों ने उत्साह पूर्वक भाग लिया।

गुरुकुल हरिपुर में अष्टम 'चतुर्वेद पारायण महायज्ञ' सम्पन्न

नुआपड़ा जिला में स्थित गुरुकुल हरिपुर जुनानी में श्रावणी पर्व के अवसर पर गुरुकुल में नूतन प्रविष्ट तीस ब्रह्मचरियों का उपनयन, वेदारम्भ तथा विद्याव्रत संस्कार, एक आदर्श गृहस्थी द्वारा वानप्रस्थ की दीक्षा से दीक्षित होना आदि कार्यक्रम के साथ 'यज्ञ एक समाधान' अनेक विषयक ब्रह्मचारियों का सांस्कृतिक कार्यक्रम भी सम्पन्न हुआ। ब्रह्मचारियों को आशीर्वाद प्रदान करने खरियारोड, नुआपडा एवं ओडिशा के विभिन्न जिलों से पांच सौ के लगभग महानुभाव उपस्थित थे।

इस अवसर पर पर्यावरण प्रदूषण समस्या, ग्लोबल वार्मिंग की समस्या, अनावृष्टि अतिवृष्टि तथा असाध्य रोगों से आज का समाज बचे एवं विश्वशान्ति व राष्ट्र रक्षा निमित्त सोलह दिवसीय चतुर्वेद पारायण महायज्ञ का आयोजन किया गया, जिसमें लगभग एक क्विंटल शुद्ध गाय का घी एवं विभिन्न औषधियों से निर्मित लगभग डेढ़ क्विंटल यज्ञ सामग्री से आहुतियाँ दी गईं। सोलह दिनों तक चलने वाले इस महायज्ञ के कार्यक्रम में श्रीमती विनोदिनी पण्डा, श्री सोमनाथ पात्र श्री विनोद जायसवाल, श्री प्रसन्न कुमार पाढी इत्यादि गणमान्य सज्जन उपस्थित हुए।

कार्यक्रम की विशेषता यह थी कि नियमित नुआपडा, खरियाररोड एवं विभिन्न गाँव से धर्मप्रेमी सज्जनगण उपस्थित होकर यज्ञ में आहुति प्रदान कर यज्ञ भगवान् से आशीर्वाद लेते थे।

यह समस्त कार्यक्रम गुरुकुल के संचालक डॉ. सुदर्शनदेव आचार्य जी के प्रत्यक्ष सान्निध्य व मार्गदर्शन तथा गुरुकुल के आचार्य दिलीप कुमार जिज्ञासु के ब्रह्मत्व में एवं श्री राजेन्द्र कुमार वर्णी व गुरुकुल के समस्त अधिकारीगणों के पुनीत सहयोग से व ईश्वर की असीम दया से निर्विघ्न सम्पन्न हुआ।

शारदा देवी छोटूसिंह आर्य चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा हैहय क्षत्रिय स्वजातीय मेधावी छात्र–छात्राओं को दशम् पुरस्कार वितरण

आर्य नेता स्वतन्त्रता सेनानी स्व. श्री छोटूसिंह आर्य, संस्थापक अध्यक्ष आर्य कन्या विद्यालय समिति, अलवर की स्मृति एवं स्व. श्रीमती दिव्या आर्य धर्मपत्नि श्री प्रमोद आर्य की पंचम् पुण्यतिथि की पावन स्मृति में माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान एवं सैन्ट्रल बोर्ड की माध्यमिक परीक्षा 2016–17 में अलवर जिले के हैहय क्षत्रिय स्वजातीय मेधावी छात्र एवं छात्राओं के लिए ट्रस्ट की ओर से दशम् पुरस्कार वितरण कार्यक्रम दिनाँक 8 सितम्बर 2017 शुक्रवार को आर्य समाज, स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर पर सायं 3:45 बजे यज्ञ से प्रारम्भ हुआ। जिसमें यज्ञ के ब्रह्मा–श्री शिव कुमार कौशिक एवं धर्मेन्द्र शास्त्री रहे। इस समारोह के मुख्य अतिथि श्री अमर मुनि, पूर्व महामंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा राज. एवं विशिष्ट अतिथि डॉ. चिराग जायसवाल, श्रीमती रश्मि गोपालिया, पूर्व पार्षद, श्री ओम प्रकाश सोमवंशी, अध्यक्ष हैहय क्षत्रिय सभा अलवर रहे। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान एवं सैन्ट्रल बोर्ड की माध्यमिक परीक्षा 2016–17 में सर्वश्रेष्ठ अंक प्राप्त करने वाले हैहय स्वाजातीय छात्र/छात्राओं कोमल सोमवंशी, देवान्शु वर्मा, सार्थक आर्य, स्नेहा आर्य, दिव्यांशी सिंह, संस्कार गोपालिया को क्रमशः 2100–2100 रुपये और प्रियांशु धानावत, शिवम कुमार बेनीवाल, हर्षिता सोमवंशी, भूमिका सिंह, जाह्नवी सिंह, डोली कुमारी, कोमल जायसवाल, बबीता बेनीवाल, सिया नोहवाल, नेहा घटवाल, विशाल जायसवाल, अनिरुद्ध धानवत को क्रमशः 1100–1100 रुपये शारदा देवी छोटूसिंह आर्य चैरिटेबल ट्रस्ट, अलवर की ओर से नकद राशि एवं स्मृति चिह्न देकर पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर श्री छोटू आर्य धर्मार्थ हॉस्पिटल द्वारा निःशुल्क चिकित्सा कैम्प लगाया गया। जिसमें लगभग 150 रोगियों को निःशुल्क परामर्श दिया गया।

Registration No. R.N.I. 39/57
Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11 \6066\2015-17
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103 \2015-17
Posted at N.D.P.S.O. ON 20/21-09-2017

डी.ए.वी. नादौन (हि.प्र.) में मनाया गया संस्कृत दिवस

डी.ए.वी. स्कूल नादौन (हि.प्र.) में संस्कृत दिवस प्रधानाचार्य आर.एस.राणा के नेतृत्व में हर्षोल्लास और श्रद्धाभाव से मनाया गया जिसमें विभिन्न प्रकार की गतिविधियों का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ गायत्री मंत्रोच्चारण से किया गया। पाँचवीं से आठवीं तक के छात्रों द्वारा संस्कृत कार्यक्रम में गायत्री मंत्र, गणेश वंदना, लघुनाटिका, संस्कृत गीत, श्लोक गायन, नृत्य, भाषण कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। श्लोक गायन एवं मंत्रों का सस्वर उच्चारण ने सब को मंत्रमुग्ध कर दिया।

इस अवसर पर प्रधानाचार्य महोदय ने छात्रों को संस्कृत सीखने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि अपनी संस्कृति के अस्तित्व को सुरक्षित रखने के लिए संस्कृत का पठन–पाठन विश्वविद्यालय स्तर तक अति आवश्यक हैं।

भारत की समस्त भाषाओं का स्रोत संस्कृत है। वेद, उपनिषद्, दर्शन, धार्मिक ग्रंथ और इतिहास सभी संस्कृत में लिखे गए हैं। संस्कृत बोलने और लिखने वालों ने संस्कृति तथा सभ्यता का निर्माण किया है। साथ ही संस्कृत जगत् में वर्तमान समय में हो रही नई–नई वैज्ञानिक खोजों के विषय में अवगत करवाया गया। अंत में प्रधानाचार्य ने अध्यापकों व बच्चों को संस्कृत दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ दीं।

डी.ए.वी. रतवार ने बढ़ाए मदद के हाथ

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल रतवार (मोहनियाँ) ने उत्तर बिहार के बाढ़–पीड़ितों के सहायतार्थ ही अपना हाथ बढ़ाया। विद्यालय के छात्र–छात्राओं एवं शिक्षक–शिक्षकाओं ने मिलकर पर्याप्त मात्रा में दैनिक उपयोग की वस्तुएँ चावल, आटा, दाल, चूड़ा, सत्तू, गुड़, बिस्किट के पॉकेट, मोमबत्ती एवं दियासलाई दो दर्जन बोरों में भरकर डी.ए.वी. प. स्कूल, आरा भेजा, जहाँ से अन्य

विद्यालयों के द्वारा संग्रहित सामग्री ट्रक द्वारा मुजफ्फरपुर भेजी गयी।

ज्ञातव्य है कि डी.ए.वी. संस्थान प्राकृतिक आपदा से पीड़ित व्यक्तियों की सहायता के लिए सदैव तत्पर रहा है। इस नेक कार्य में योगदान करने की भूरि–भूरि प्रशंसा करते हुए विद्यालय के प्रधान ए.के. बक्शी ने सभी छात्र–छात्राओं और सहकर्मियों को धन्यवाद ज्ञापित किया है।

डी.ए.वी. सेक्टर 14, गुरुग्राम की श्रीमती मंजु जैन शिक्षक पुरस्कार से पुरस्कृत

हाल में केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने देश– विदेश में संबद्ध अपने विद्यालयों के 33 शिक्षकों को उनके नवोन्मेषी पठन–पाठन के लिए सी.बी.एस.ई. शिक्षक पुरस्कार 2016–17 से सम्मानित किया जिनमें से डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल सेक्टर 14, गुरुग्राम की संस्कृत शिक्षिका श्रीमती मंजु जैन को भी यह गौरव प्राप्त हुआ। इस सम्मान समारोह का आयोजन चाणक्यपुरी स्थित रेल संग्रहालय में किया गया जिसके मुख्य अतिथि केंद्रीय मानव संसाधन विकास राज्य मंत्री श्री

उपेंद्र कुशवाहा के साथ सी.बी.एस.ई. की नवनियुक्त अध्यक्षा अनीता करवाल, राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् के सचिव संजय अवस्थी, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान व प्रशिक्षण परिषद् के निदेशक प्रो. ऋषिकेश सेनापति, बोर्ड के सचिव अनुराग त्रिपाठी समेत विभिन्न संगठनों के प्रतिनिधि उपस्थित रहे। श्रीमती मंजु जैन ने अपने 30 वर्ष के शिक्षण कार्यकाल में अपनी प्रतिभा,कर्मठता तथा प्रतिबद्धता का परिचय दिया है अतः केंद्रीय मानव संसाधन विकास राज्य मंत्री श्री उपेंद्र कुशवाहा द्वारा संस्कृत शिक्षिका श्रीमती मंजु जैन को एक प्रशस्ति पत्र, शाल तथा 50 हजार रुपए नगद पुरस्कार द्वारा सम्मानित किया।

☞ *पृष्ठ 01 का शेष*

डी.ए.वी एडवर्ड गंज मलोट ...

इस अवसर पर विद्यालय के प्राचार्य जी. सी. शर्मा ने आये हुए सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि विद्यालय के प्रत्येक विभाग द्वारा विद्यार्थियों व अभिभावकों के सहयोग से नवीन–नवीन चलित–अचलित मॉडल व चार्ट बनाकर अपने हुनर का प्रदर्शन किया गया है। इसलिए प्रत्येक विभाग बधाई का पात्र है।

विद्यालय द्वारा लगाई गई इस प्रदर्शनी को देखने के लिए डी.ए.वी. व स्थानीय विद्यालयों के प्राचार्य, अध्यापक छात्र और समस्त अभिभावकों के साथ–साथ शहर के अनेक गणमान्य नागरिक उपस्थित हुए। सभी ने इस प्रकार की प्रदर्शन को प्रत्येक वर्ष लगाने का अनुग्रह किया।

रीजनल डायरैक्टर डॉ नीलम कामरा व डायरैक्टर श्री जे.वी. शूर जी ने इस अवसर पर अपनी विशेष शुभकामनाएं प्रेषित कीं। इस अवसर पर डी.ए.वी. विद्यालयों के प्राचार्यों के अलावा, स्थानीय प्रबन्ध कमेटी के सभी सदस्य गण, शहर के अनेक गणमान्य नागरिकों के अलावा विद्यालय का सम्पूर्ण स्टाफ उपस्थित था।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.,** डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.–9868894601, 23362110, 23360059 सम्पादक – **पूनम सूरी**